जैन विश्वभारती संस्थान

(मान्य विश्वविद्यालय)

लाडनूं - 341306

आचार्यश्री महाप्रज्ञकृत

तुलसी मञ्जरी

■

हिन्दी व्याख्या

समणी अमितप्रज्ञा

बी.ए. द्वितीय वर्ष

गणप्रकरणम् (616 से 802 सूत्र तक)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

आर्हतीभारतीं स्मृत्वा, भैक्षवीं च मतिप्रदाम्।
तुलसीमञ्जरी मञ्जु-रुत्तरार्धेन तन्यते॥

अर्थ

अथ गण-प्रकरणम्

भू-सत्तायाम्

616. भुवेर्हो-हुव-हवाः 4/60

भू धातोरेते त्रय आदेशा वा स्युः।

■ भू धातु को हो, हुव, हव ये तीन आदेश विकल्प से होते हैं।

617. त्यादीनामाद्यत्रयस्याद्यस्येचेचौ 3/139

त्यादीनां विभक्तीनां परस्मैपदानामात्मनेपदानां च प्रथम—त्रयस्य यदाद्यं वचनं तस्य स्थाने इच् एच् इत्यादेशौ स्तः।

■ परस्मैपद और आत्मनेपद के त्यादि विभक्तियों के प्रथम-त्रय (प्रथम पुरुष के एकवचन, द्विवचन तथा बहुवचन) का जो आद्य वचन (तिप्, ते) है उसके स्थान में इच् और एच् ये आदेश होते हैं।

618. मध्ये च स्वरान्ताद् वा 3/178

स्वरान्ताद् धातोः प्रकृतिप्रत्ययोर्मध्ये चात् प्रत्ययानां च ज्ज, ज्जा इत्येतौ वा स्तः वर्तमानाभविष्यन्त्योर्विध्यादिषु च। होज्जइ, होज्जाइ, होज्ज, होज्जा। पक्षे—होइ—इत्यवस्थायाम्।

■ स्वरान्त धातु से प्रकृति (धातु) और प्रत्यय के बीच में तथा वर्तमान, भविष्यत्, विधि आदि प्रत्ययों के स्थान पर ज्ज, ज्जा विकल्प से होते हैं।

⊙ होज्जइ, होज्जाइ, होज्ज, होज्जा, होइ (भवति — होता है)

भू + तिप्

'भूवेर्हो-हुव-हवाः' (616) से विकल्प से भू धातु को हो आदेश

'त्यादीना....' (617) से तिप् के स्थान पर इच्

'मध्ये च स्वरान्ताद् वा' (618) से विकल्प से धातु और प्रत्यय के मध्य ज्ज, ज्जा

च् अनुबंध जाने पर

वर्ण-सम्मेलन करने पर

होज्जइ, होज्जाइ रूप सिद्ध हुआ।

विकरण के अभाव में 'मध्ये च...' (618) से प्रत्यय (इच्) के स्थान पर विकल्प से ज्ज, ज्जा करने पर होज्ज, होज्जा रूप सिद्ध हुआ।

पक्ष में—प्रकृति और प्रत्यय के बीच तथा

प्रत्यय के स्थान पर ज्ज, ज्जा आदेश के अभाव में होइ बनेगा।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

619. स्वरादनतो वा 4/240

अकारान्तवर्जितात् स्वरान्ताद् धातोरन्ते अदागमो वा स्यात्। होअइ। पक्षे—होइ। एच् प्राप्तौ।

■ अकारान्त को छोड़कर स्वरान्त धातु के अंत में अकार का आगम विकल्प से होता है।

⊙ होअइ, होइ (भवति—होता है)

भू + तिप्

'भुवेर्हो....' (616) से विकल्प से भू धातु को हो आदेश

'त्यादी....' (617) से तिप् के स्थान पर इच्

'स्वरादनतो वा' (619) से विकल्प से धातु के अंत में अकार का आगम

होअ इच्

च् अनुबंध जाने पर

वर्ण-सम्मेलन करने पर होअइ रूप सिद्ध हुआ।

पक्ष में—होइ

620. अत एवैच् से 3/145

एच्, से इत्येतौ अकारान्तादेव स्तः नान्यस्मात्।

■ एच् और से ये दोनों अकारान्त से ही होते हैं, अन्य स्वरान्त धातुओं से नहीं।

621. बहुष्वाद्यस्य न्ति न्ते इरे 3/142

त्यादीनां परस्मैपदानामात्मनेपदानामाद्यत्रयस्य बहुषु वर्तमानस्य वचनस्य स्थाने न्ति, न्ते, इरे, इत्यादेशाः स्युः। होन्ति, होन्ते, होइरे। ज्जादेशादयः पूर्ववत्।

■ परस्मैपद और आत्मनेपद के त्यादि के प्रथम-त्रय के बहुवचन (अन्ति, अन्ते) के स्थान में न्ति, न्ते, इरे आदेश होते हैं।

⊙ होन्ति, होन्ते, होइरे (भवन्ति — होते हैं)

भू + अन्ति

'भुवेर्हो....' (616) से भू को विकल्प से हो आदेश

'बहुष्वाद्यस्य....' (621) से अन्ति के स्थान पर न्ति, न्ते, इरे

वर्ण-सम्मेलन करने पर होन्ति, होन्ते, होइरे रूप सिद्ध हुआ।

622. द्वितीयस्य सि से 3/140

त्यादीनां परस्मैपदानामात्मनेपदानां द्वितीयस्य त्रयस्याद्यवचनस्य स्थाने सि, से इत्यादेशौ स्तः। होसि।

■ परस्मैपद और आत्मनेपद के त्यादि के द्वितीय-त्रय के आद्यवचन (सिप्, से) के स्थान में सि, से आदेश होते हैं।

⊙ होसि (भवसि)

भू + सिप्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

'भुवेर्हो....' (616) से विकल्प से भू को हो आदेश
'द्वितीयस्य सि से' (622) से सिप् के स्थान में सि
वर्ण-सम्मेलन करने पर होसि रूप सिद्ध हुआ।

623. मध्यमस्येत्था-हचौ 3/143

त्यादीनां परस्मैपदानामात्मनेपदानां मध्यमत्रयस्य बहुषु वर्तमानस्य स्थाने इत्था, हच् इत्यादेशौ स्तः। होइत्था, होह।

■ परस्मैपद और आत्मनेपद के त्यादि के मध्यम-त्रय के बहुवचन (थ,ध्वे) के स्थान में इत्था और हच् आदेश होते हैं।

⊙ होइत्था, होह (भवथ)

भू + थ
'भुवेर्हो....' (616) से विकल्प से भू को हो आदेश
'मध्यम...' (623) से थ के स्थान में इत्था तथा हच् आदेश
च् अनुबंध जाने पर
वर्ण-सम्मेलन करने पर होइत्था, होह रूप सिद्ध हुआ।

624. तृतीयस्य मिः 3/141

त्यादीनां परस्मैपदानामात्मनेपदानां तृतीयस्य त्रयस्याद्यस्य वचनस्य स्थाने मिरादेशः स्यात्। होमि।

■ परस्मैपद और आत्मनेपद के त्यादि के तृतीय-त्रय के आद्य-वचन (मिप्, ए) के स्थान में मि आदेश होता है।

⊙ होमि (भवामि)

भू + मिप्
'भुवेर्हो....' (616) से विकल्प से भू को हो आदेश
'तृतीयस्य मिः' (624) से मिप् के स्थान में मि
वर्ण-सम्मेलन करने पर

625. तृतीयस्य मो-मु-माः 3/144

त्यादीनां परस्मैपदानामात्मनेपदानां तृतीयस्य त्रयस्य बहुवचनस्य स्थाने मो, मु, म, इत्येते आदेशाः स्युः। होमो, होमु, होम।

■ परस्मैपद और आत्मनेपद के त्यादि के तृतीय-त्रय के बहुवचन (मस्, महे) के स्थान में मो, मु, म आदेश होते हैं।

⊙ होमो, होमु, होम (भवामः)

भू + मस्
'भुवेर्हो... (616) से विकल्प से भू को हो आदेश
'तृतीयस्य...' (625) से मस् को मो, मु, म आदेश
वर्ण-सम्मेलन करने पर

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

626. दु सु मु विध्यादिष्वेकस्मिंस्त्रयाणाम् 3/173

विध्यादिष्वर्थेष्वेकत्वेर्थे वर्तमानानां त्रयाणामपि त्रिकाणां स्थाने यथासंख्यं दु, सु, मु इत्येते आदेशाः स्युः। होउ।

■ विधि आदि अर्थ में रहे हुए तीनों पुरुषों के एकवचन के प्रत्ययों को क्रमशः दु, सु, मु आदेश होते हैं।

⊙ होउ (भवतु)

भू + तुप्

'भुवेर्हो....' (616) से विकल्प से भू को हो आदेश

'दु सु मु .....' (626) से तुप् को दु आदेश

वर्ण-सम्मेलन करने पर

'क-ग-च...' (17) से द् का लोप

627. बहुषु न्तु ह मो 3/176

विध्यादिषु बहुष्वर्थेषु वर्तमानानां त्रयाणां त्रिकाणां स्थाने यथासंख्यं न्तु, ह, मो इत्यादेशाः स्युः। होन्तु।

■ विधि आदि अर्थ में रहे हुए तीनों पुरुषों के बहुवचन के प्रत्ययों को क्रमशः न्तु, ह, मो आदेश होते हैं।

⊙ होन्तु (भवन्तु)

भू + अन्तु

'भुवेर्हो....' (616) से भू को हो आदेश

'बहुषु न्तु ह मो' (627) से अन्तु को न्तु आदेश

वर्ण-सम्मेलन करने पर

628. सोर्हिर्वा 3/174

सोः स्थाने हिरादेशो वा स्यात्। होहि, होसु, होमु, होह, होमो।

■ सु (पूर्वसूत्र विहित दु, सु, मु) के स्थान में हि आदेश विकल्प से होता है।

⊙ होहि, होसु (भव)

भू + हि

'भुवेर्हो....' (616) से भू को विकल्प से हो आदेश

'दु सु मु ....' (626) से हि को सु आदेश

'सोर्हिर्वा' (628) से विकल्प से सु को हि आदेश

वर्ण-सम्मेलन करने पर

पक्ष में—विकल्प से सु को हि आदेश नहीं करेंगे वहां होसु बनेगा।

⊙ होमु (भवानि)

भू + आनिप्

'भुवेर्हो ....' (626) से भू को विकल्प से हो आदेश

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

'दु सु मु .... ' (626) से आनिप् को मु आदेश
वर्ण-सम्मेलन करने पर

⊙ होह (भवत)

भू + त
'भुवेर्हो...' (616) से विकल्प से भू को हो आदेश
'बहुषु न्तु ह मो' (627) से त को ह आदेश
वर्ण-सम्मेलन करने पर

⊙ होमो (भवाम)

भू + आमप्
'भुवेर्हो....' (616) से भू को विकल्प से हो आदेश
'बहुषु .....' (627) से आमप् को मो आदेश
वर्ण-सम्मेलन करने पर

629. ज्जात् सप्तम्या इर्वा 3/165

सप्तम्यादेशात् ज्जात् इर्वा प्रयोज्यः। होज्जइ, होज्ज।

■ सप्तमी (विधिलिंग) का आदेशभूत ज्ज से परे इ का प्रयोग विकल्प से करना चाहिए।

⊙ होज्जइ, होज्ज (भवेत्)

भू + यात्
'भुवेर्हो....' (616) से विकल्प से भू को हो आदेश
'मध्ये च ....' (618) से यात् को ज्ज आदेश
'ज्जात् सप्तम्या इर्वा' (629) से विकल्प से ज्ज से परे इ
वर्ण-सम्मेलन करने पर

पक्ष में—होज्ज

630. सी ही हीअ भूतार्थस्य 3/162

भूतार्थस्य प्रत्ययस्य स्थाने एते त्रय आदेशाः स्युः। होसी, होही, होहीअ।

■ भूतार्थ में विहित प्रत्यय के स्थान में सी, ही, हीअ ये तीन आदेश होते हैं।

⊙ होसी, होही, होहीअ (अभूत्, अभवत्, बभूव)

भू + दि, भू + दिप्, भू + णप्
'भुवेर्हो....' (616) से भू को हो आदेश
'सी ही हीअ भूतार्थस्य' (630) से भूतार्थक प्रत्ययों को सी, ही हीअ आदेश
वर्ण-सम्मेलन करने पर

631. भविष्यति हिरादिः 3/166

भविष्यदर्थे विहिते कृत प्रत्यये परे तस्यैव आदिर्हिः प्रयोक्तव्यः। होहिइ, होहिन्ति, होहिन्ते, होहिइरे, होहिसि, होहित्था, होहिह।

■ भविष्यत् अर्थ में विहित प्रत्यय परे होने पर उसकी आदि में हि प्रयोग करना चाहिए।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

⊙ होहिइ (भविष्यति)

भू + स्यति

'भुवेर्हो....' (616) से भू को विकल्प से हो आदेश

'भविष्यति हिरादि:' (631) से प्रत्यय से पहले हि

'त्यादीना .....' (617) से स्यति को इच्

च् अनुबंध जाने पर

वर्ण-सम्मेलन करने पर

⊙ होहिन्ति, होहिन्ते, होहिइरे (भविष्यन्ति)

भू + स्यन्ति

हो हि + स्यन्ति (पूर्ववत्)

'बहुष्वाद्यस्य....' (621) से स्यन्ति को न्ति, नते, इरे आदेश

वर्ण-सम्मेलन करने पर

⊙ होहिसि (भविष्यसि)

भू + स्यसि

हो हि स्यसि (पूर्ववत्)

'द्वितीयस्य सि से' (622) से स्यसि को सि आदेश

वर्ण-सम्मेलन करने पर

⊙ होहित्था, होहिह (भविष्यथ)

भू + स्यथ

हो हि स्यथ (पूर्ववत्)

'मध्यम.....' (623) से स्यथ को इत्था और हच् (ह)

हो हि इत्था, हो हि हच्

'लुक्' (235) से स्वर परे होने पर स्वर (इ) का लोप

'अज्झीनं परेण संयोज्यम्' इस न्याय से मिलाने पर होहित्था बनेगा।

वर्ण-सम्मेलन करने पर होहिह बनेगा।

632. मे: स्सं 3/169

धातो: परो भविष्यति मे: स्थाने स्सं वा प्रयोक्तव्य:। होस्सं।

■ भविष्यत्काल में धातु से परे मि के स्थान पर विकल्प से स्सं का प्रयोग करना चाहिए।

⊙ होस्सं (भविष्यामि)

भू + स्यामि

'भुवेर्हो....' (616) से विकल्प से भू को हो आदेश

'तृतीयस्य मि:' (624) से स्यामि को मि आदेश

'मे: स्सं' (632) से विकल्प से मि को स्सं आदेश

वर्ण-सम्मेलन करने पर

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

633. मि-मो-मु-मे स्सा हा न वा 3/167

भविष्यत्यर्थे मिसोमुमेषु परेषु तेषामेव आदी स्सा, हा इत्येतौ वा प्रयोक्तव्यौ। होस्सामि, होहामि। पक्षे—होहिमि। होस्सामो, होहामो। होस्सामु, होहामु। होस्साम, होहाम। क्वचित्तु हा न भवति—हसिस्सामो, हसिहिमो।

■ भविष्यत् अर्थ में मि, मो, मु, म परे होने पर उनके पूर्व स्सा और हा विकल्प से प्रयोग करने चाहिए।

⊙ होस्सामि, होहामि, होहिमि (भविष्यामि)

भू + स्यामि

हो + स्यामि

'तृतीयस्य मिः' (624) से स्यामि को मि आदेश

'मि-मो-मु-मे ....' (633) से विकल्प से प्रत्यय से पूर्व स्सा, हा का प्रयोग

वर्ण-सम्मेलन करने पर

पक्ष में—विकल्प से प्रत्यय से पूर्व स्सा, हा नहीं करेंगे वहां 'भविष्यति....' (631) से प्रत्यय से पूर्व हि करने पर होहिमि बनेगा।

⊙ होस्सामो, होहामो, होस्सामु, होहामु, होस्साम, होहाम (भविष्यामः)

भू + स्यामस्

हो + स्यामस्

'तृतीयस्य मो-मु-माः' (625) से स्यामस् को मो, मु, म

'मि-मो-मु-मे ....' (633) से विकल्प से प्रत्यय से पूर्व स्सा, हा

वर्ण-सम्मेलन करने पर

■ कहीं हा नहीं होता है—

⊙ हसिस्सामो, हसिहिमो (हसिष्यामः)

हस् + स्यामस्

'व्यञ्जनाददन्ते' (638) से धातु के अन्त में अकार का आगम

'तृतीयस्य मो-मु-माः' (625) से स्यामस् को मो

'एच्च कत्वा...' (645) से धातु के अ को इ

हसि मो

'मि-मो-मु....' (633) हसि स्सा मो से विकल्प से प्रत्यय से पूर्व स्सा

हसि स्सा मो

वर्ण-सम्मेलन करने पर

पक्ष में—विकल्प से स्सा नहीं करेंगे वहां

'भविष्यति ....' (631) से हि करने पर हसिहिमो बनेगा।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

634. मो-मु-मानां हिस्सा हित्था 3/168

धातोर्भविष्यति मोमुमानां स्थाने हिस्सा, हित्था, इत्येतौ वा प्रयोक्तव्यौ। होहिस्सा, होहित्था। पक्षे — होहिमो, होहिमु, होहिम।

■ भविष्यत् अर्थ में धातु से परे मो, मु, म के स्थान में हिस्सा और हित्था विकल्प से प्रयोग करने चाहिए।

⊙ होहिस्सा, होहित्था, होहिमो, होहिमु, होहिम (भविष्यामः)

भू + स्यामस्

हो + स्यामस्

'तृतीयस्य मो-मु-माः' (625) से स्यामस् को मो, मु, म

'मो-मु-मानां हिस्सा हित्था' (634) से विकल्प से मो, मु, म को हिस्सा, हित्था

वर्ण-सम्मेलन करने पर

पक्ष में—विकल्प से मो, मु, म को हिस्सा, हित्था नहीं करेंगे वहां 'भविष्यति ...' (631) से मो, मु, म से पूर्व हि करने पर होहिमो, होहिमु, होहिम बनेगा।

635. क्रियातिपत्तेः 3/179

क्रियातिपत्तेः स्थाने ज्ज, ज्जा वादेशौ स्तः। होज्ज, होज्जा।

■ क्रियातिपत्ति[1] (क्रिया की असंभवता) के स्थान में ज्ज, ज्जा आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ होज्ज, होज्जा (अभविष्यत्)

भू + स्यत्

हो + स्यत्

'क्रियातिपत्तेः' (635) से स्यत् को ज्ज, ज्जा विकल्प से आदेश

वर्ण-सम्मेलन करने पर

636. न्त माणौ 3/180

क्रियातिपत्तेः स्थाने न्तमाणौ आदेशौ स्तः। होन्तो, होमाणो।

हरिण-ट्ठाणे हरिणङ्क जइ सि हरिणाहिवं निवेसंतो।

न सहन्तो च्चिअ तो राहुपरिहवं से जिअन्तस्स ॥[2]

■ क्रियातिपत्ति के स्थान में न्त और माण आदेश होते हैं।

अर्थात्—हे हरिणाङ्क चन्द्र! यदि तू हरिण की जगह हरिणाधिप (सिंह) को स्थान देता तो तू उस जयशील सिंह के कारण राहु से प्राप्त हुये तिरस्कार को कभी सहन न करता। भावार्थ है कि राहुग्रसित चन्द्र को देख कोई कवि उसे कह रहा है कि हे चन्द्र! तूने जिसे अपना साथी बनाया है वह हरिण निर्बल है, अतः राहु ने तुझे दबोचने का साहस किया है। यदि तू सिंह से मित्रता करता तो राहु का तेरे निकट आने का साहस ही न होता।

---

1 एक क्रिया के हुए बिना दूसरी क्रिया का न होना क्रियातिपत्ति है। यथा—यदि तुम पढ़ते तो उत्तीर्ण हो जाते।

2 संस्कृत छायाः हरिणस्थाने हरिणाङ्क! यदि त्वं हरिणाधिपं न्यवेक्ष्यः।
न असहिष्यथा एव ततो राहुपरिभवमस्य जयतः ॥

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

⊙ होन्तो, होमाणो (अभविष्यत्)

भू + स्यत्

हो+ स्यत्

'न्त-माणौ' (636) से स्यत् को न्त और माण आदेश

वर्ण-सम्मेलन करने पर

होन्त + सि, होमाण + सि

'अतः सेर्डोः' (394) से सि को डो

ड् अनुबंध जाने पर

'डित्यन्त्यस्वरादेः' (हेम. 2/1/114) से अंतिम स्वर अ का लोप

होन्त् + ओ, होमाण् + ओ

'अज्झीनं परेण संयोज्यम्' इस न्याय से मिलाने पर

637. वर्तमाना-भविष्यन्त्योश्च ज्ज ज्जा वा 3/177

वर्तमानभविष्यद्विध्यादिषु विहितस्य प्रत्ययस्य स्थाने ज्ज, ज्जा वादेशौ वा स्तः।

■ वर्तमान, भविष्यत् और विधि आदि में विहित प्रत्यय के स्थान में ज्ज, ज्जा आदेश विकल्प से होते हैं।

638. व्यञ्जनाददन्ते 4/239

व्यञ्जनान्ताद् धातोरन्ते अकारः स्यात्।

■ व्यञ्जनन्त धातु के अन्त में अकार होता है।

639. ज्जा-ज्जे 3/159

ज्जा, ज्ज इत्यादेशयोः परयोरकारस्य एकारः स्यात्। हुवेज्ज, हुवेज्जा। पक्षे —

■ ज्जा, ज्ज आदेश परे होने पर अकार को एकार होता है।

⊙ हुवेज्ज, हुवेज्जा (भवति)

भू + तिप्

'भुवेर्हो...' (616) से विकल्प से भू को हुव् आदेश

हुव् + तिप्

'व्यञ्जना...' (638) से धातु के अंत में अकार

वर्तमाना-भविष्य ...' (637) से विकल्प से तिप् को ज्ज, ज्जा

'ज्जा-ज्जे' (639) से धातु के अ को ए

वर्ण-सम्मेलन करने पर

640. वर्तमाना-पञ्चमी-शतृषु वा 3/158

एषु परतोऽकारस्य एकारो वा स्यात्। हुवेइ, हुवइ। हुवन्ति, हुवन्ते, हुविरे। हुवसि, हुवसे। हुवित्था, हुवह।

■ वर्तमान, पञ्चमी (लोट् लकार) और शतृ प्रत्यय परे होने पर अकार को एकार विकल्प से होता है।

JainVishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

⊙ हुवेइ, हुवइ (भवति)

भू + तिप्

हुव + तिप् (पूर्ववत्)

'त्यादीना.....' (617) से तिप् को इच्

च् अनुबंध जाने पर

'वर्तमाना-पञ्चमी...' (640) से विकल्प से धातु के अ को ए

वर्ण-सम्मेलन करने पर

पक्ष में—अ को ए विकल्प से नहीं करेंगे वहां हुवइ बनेगा।

⊙ हुवन्ति, हुवन्ते, हुविरे (भवन्ति)

भू + अन्ति

हुव + अन्ति

'बहुष्वाद्यस्य...' (621) से अन्ति को न्ति, न्ते, इरे

वर्ण-सम्मेलन करने पर

इसके अलावा 'लुक्' (235) से स्वर (अ) का लुक् तथा 'अज्झीनं परेण संयोज्यम्' इस न्याय से मिलाने पर हुविरे बनेगा।

⊙ हुवसि, हुवसे (भवसि)

भू + सिप्

हुव + सिप्

'द्वितीयस्य सि से' (622) से सिप् को सि तथा से

वर्ण-सम्मेलन करने पर

⊙ हुवित्था, हुवह (भवथ)

भू + थ

हुव + थ

'मध्यमस्येत्था-हचौ' (623) से थ को इत्था और हच्

'लुक्' (235) से स्वर (अ) का लुक्

'अज्झीनं परेण संयोज्यम्' इस न्याय से मिलाने पर हुवित्था बनेगा

वर्ण-सम्मेलन करने पर हुवह बनेगा।

641. मौ वा 3/154

अदन्ताद् धातोर्मौ परे अत आत्त्वं वा स्यात्। हुवामि, हुवमि।

■ अदन्त धातु से मि परे होने पर धातु के अकार को विकल्प से आकार होता है।

⊙ हुवामि, हुवमि (भवामि)

भू + मिप्

हुव + मिप्

'तृतीयस्य मिः' (624) से मिप् को मि

'मौ वा' (641) से विकल्प से धातु के अ को आ

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

वर्ण-सम्मेलन करने पर

पक्ष में—अ को आ विकल्प से नहीं करेंगे वहां हुवमि बनेगा।

642. इच्च मो-मु-मे वा 3/155

अदन्ताद् धातोः परेषु मोमुमेषु अत इत्त्वं चात् आत्त्वं च वा स्तः। हुविमो, हुवामो, हुवमो। एवं मुमयोरपि। हुवउ, हुवन्तु।

■ अदन्त धातु से मो, मु म परे होने पर धातु के अकार को इकार और आकार विकल्प से होता है।

⊙ हुविमो, हुवामो, हुवमो (भवामः)

भू + मस्

हुव + मस्

'तृतीयस्य...' (625) से मस् को मो

'इच्च मो-मु-मे वा' (642) से विकल्प से धातु के अ को इ तथा आ

वर्ण-सम्मेलन करने पर

पक्ष में—हुवमो

इसी प्रकार हुविमु, हुवामु, हुवमु, हुविम, हुवाम, हुवम रूप भी बनेंगे।

⊙ हुवउ (भवतु)

भू + तुप्

हुव + तुप्

शेष प्रक्रिया होउ की तरह

⊙ हुवन्तु (भवन्तु)

भू + अन्तु

हुव + अन्तु

शेष प्रक्रिया होन्तु की तरह

643. अत इज्जस्विज्जहीज्जे-लुको वा 3/175

अतः परस्य सोः इज्जसु, इज्जहि, इज्जे, इत्येते लुक् च वा स्युः। हुवेज्जसु, हुवेज्जहि, हुवेज्जे, हुव। पक्षे—हुवसु, हुवह। मुमो इत्येतयोः पूर्ववत्।

■ अकार से परे सु को इज्जसु, इज्जहि, इज्जे और लुक् विकल्प से होते हैं।

⊙ हुवेज्जसु, हुवेज्जहि, हुवेज्ज, हुव, हुवसु (भव)

भू + हि

'भुवेर्हो-हुव-हवाः' (616) से भू को विकल्प से हुव् आदेश

'व्य×जनाददन्ते' (638) से धातु के अंत में अकार का आगम

हुव + हि

'दु सु मु.....' (626) से हि को सु आदेश

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

'अत इज्जस्विज्जहीज्जे-लुको वा' (643) से सु को क्रमशः इज्जसु, इज्जहि, इज्जे और लुक् आदेश

'युवर्णस्य गुणः' (663) से गुण (अ+इ=ए)

(लुक् आदेश करेंगे (हुव) वहां गुण नहीं होगा।)

पक्ष में—जहां चारों आदेश नहीं करेंगे वहां हुवसु बनेगा।

⊙ हुवह (भवत)

भू + त

'भुवेर्हो.....' (616) भू को विकल्प से हुव् आदेश

'व्यञ्जना.....' (638) से धातु के अंत में अ

'बहुसु न्तु ह मो' (627) से त को ह आदेश

वर्ण-सम्मेलन करने पर

644. व्य×जनादीअः 3/163

व्य×जनान्ताद् धातोः परस्य भूतार्थप्रत्ययस्य ईअ इत्यादेशः स्यात्। हुवीअ।

■ व्य×जनान्त धातु से परे भूतार्थ प्रत्यय को ईअ आदेश होता है।

⊙ हुवीअ (अभूत्, अभवत्, बभूव)

भू + दि, भू + दिप्, भू + णप्

'भुवेर्हो.....' (616) से भू को विकल्प से हुव् आदेश

'व्यञ्जना.....' (638) से धातु के अंत में अ

'व्यञ्जनादीअः.....' (644) से भूतार्थक प्रत्ययों को ईअ आदेश

'लुक्' (235) से स्वर (अ) का लोप

'अज्झीनं परेण संयोज्यम्' इस न्याय से मिलने पर

645. एच्च क्त्वा-तुम्-तव्य-भविष्यस्तु 3/157

एषु परेषु अत एकारश्चात् इकारश्च स्यात्। हुवेहिइ, हुविहिइ एवं परेषामपि। हुज्ज, हुज्जा, हुन्तो, हुमाणो।

■ क्त्वा, तुम्, तव्य और भविष्यत्कालीन प्रत्यय परे होने पर अकार को एकार और इकार होता है।

⊙ हुवेहिइ, हुविहिइ (भविष्यति)

भू + स्यति

'भुवेर्हो.....' (616) से भू को विकल्प से हुव् आदेश

'व्यञ्जना.....' (638) से धातु के अंत में अ

'भविष्यति.....' (631) से प्रत्यय से पूर्व हि

'त्यादीना.....' (617) से स्यति को इच्

हुव हि इच्

च् अनुबंध जाने पर

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

'एच्च कत्वा-तुम्-तव्य-भविष्यत्सु' (645) से अकार को क्रमशः ए, इ
वर्ण-सम्मेलन करने पर

⊙ हुज्ज, हुज्जा (अभविष्यत्)

भू + स्यत्

'अविति हुः' (648) से भू को विकल्प से हु आदेश
'क्रियातिपत्तेः' (635) से स्यत् को विकल्प से ज्ज, ज्जा आदेश
वर्ण-सम्मेलन करने पर

⊙ हुन्तो, हुमाणो (अभविष्यत्)

भू + स्यत्

'अविति हुः' (648) से भू को विकल्प से हु आदेश

हु + स्यत्

शेष प्रक्रिया होन्तो, होमाणो (सू. 636) की तरह

646. स्वराणां स्वराः 4/238

धातुषु स्वराणां स्थाने स्वरा बहुलं स्युः। हवइ, हिवइ। शेषं हुववत्। पक्षे—

■ धातुओं में स्वरों के स्थान पर स्वर बहुलता से होते हैं।

⊙ हिवइ, हवइ (भवति)

भू + तिप्

'भुवेर्हो.....' (616) से भू को विकल्प से हव् आदेश
'व्यञ्जना.....' (638) से धातु के अंत में अ
'त्यादीना.....' (617) से तिप् को इच्
च् अनबंध जाने पर

हव + इ

'स्वराणां स्वराः' (646) से स्वर (अ) के स्थान पर बहुलता से स्वर (इ)
वर्ण-सम्मेलन करने पर
जहां बहुलता से स्वर के स्थान पर दूसरा स्वर नहीं करेंगे वहां हवइ बनेगा।

647. उवर्णस्यावः 4/233

धातोरन्त्यस्योवर्णस्य अवादेशः स्यात्। भवेज्ज, भवेज्जा। भवेइ, भवइ।

■ धातु के अन्तिम उव र्ण को अव आदेश होता है।

⊙ भवेज्ज, भवेज्जा (भवति)

भू + तिप्

'उवर्णस्यावः' (647) से ऊ को अव आदेश

भव + तिप्

'वर्तमाना-भविष्य.....' (637) से विकल्प से तिप् को ज्ज, ज्जा
'ज्जा-ज्जे' (639) से धातु के अ को ए

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

वर्ण-सम्मेलन करने पर

⊙ भवेइ, भवइ (भवति)

भू + तिप्

'उवर्णस्याव:' (647) से ऊ को अव आदेश

भव + तिप्

शेष प्रक्रिया हुवेइ, हुवइ (सू. 640) की तरह

648. अविति हु: 4/61

विद्वर्जे प्रत्यये परे भुवो हु इत्यादेशो वा स्यात्। हुंति, हुंते, हुइरे। पक्षे—भवन्ति, भवन्ते, भविरे। शेषं पूर्ववत्।

■ विद् (पित्) को छोड़कर प्रत्यय परे होने पर भू धातु को हु आदेश विकल्प से होता है।

⊙ हुंति, हुंते, हुइरे, भवन्ति, भवन्ते, भविरे (भवन्ति)

भू + अन्ति

'अविति हु:' (648) से भू को विकल्प से हु आदेश

'बहुष्वाद्यस्य.....' (621) से अन्ति को न्ति, न्ते, इरे

वर्ण-सम्मेलन करने पर

'ङञणनो व्यञ्जने' (33) से न् को अनुस्वार

पक्ष में—जहां भू को हु आदेश नहीं करेंगे वहां 'उवर्णस्याव:' (647) से ऊ को अव करने पर

भवन्ति, भवन्ते, भविरे बनेगा।

649. पृथक्-स्पष्टे णिव्वड: 4/62

पृथक्भूते स्पष्टे च कर्तरि भुवो णिव्वड इत्यादेश: स्यात्। णिव्वडइ।

■ पृथक्भूत और स्पष्ट अर्थ में भू को णिव्वड आदेश होता है।

⊙ णिव्वडइ (भवति — पृथक् होता है, स्पष्ट होता है)

भू + तिप्

'पृथक्-स्पष्टे णिव्वड:' (649) से भू को णिव्वड् आदेश

'व्यञ्जनाददन्ते' (638) से धातु के अंत में अ

'त्यादीना.....' (617) से तिप् को इच्

च् अनुबंध जाने पर

वर्ण-सम्मेलन करने पर णिव्वडइ रूप बनेगा।

650. प्रभौ हुप्पो वा 4/63

प्रभुकर्तृकस्य भुवो हुप्प इत्यादेशो वा स्यात्। पहुप्पइ। पक्षे — पभवइ।

■ प्रभुकर्तृक भू को हुप्प आदेश विकल्प से होता है।

⊙ पहुप्पइ, पभवइ (प्रभवति — समर्थ होता है)

प्रभू + तिप्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

'सर्वत्र ल-बरामवन्द्रे' (9) से र् का लोप
'प्रभौ हुप्पो वा' (650) से विकल्प से भू को हुप्प् आदेश
'व्यञ्जनाददन्ते' (638) से धातु के अंत में अ
'त्यादीना.....' (617) से तिप् को इच्
च् अनुबंध जाने पर
वर्ण-सम्मेलन करने पर
पक्ष में — जहां भू को हुप्प् आदेश नहीं करेंगे वहां पभवइ बनेगा।

651. अत्थिस्त्यादिना 3/148

अस्तेः स्थाने त्यादिभिः सह अत्थि इत्यादेशः स्यात्। पुरुष-वचने न विवक्षिते। अत्थि सो, अत्थि ते, अत्थि तुवं, अत्थि तुम्हे, अत्थि अहं, अत्थि अम्हे।

■ तिप् आदि सभी विभक्तियों सहित अस्ति को अत्थि आदेश होता है। पुरुष (प्रथमपुरुष, मध्यमपुरुष, उत्तमपुरुष) और वचन (एकवचन, द्विवचन, बहुवचन) की विवक्षा नहीं है।

⊙ अत्थि सो (अस्ति सः — वह है)
अस् + तिप्
'अत्थिस्त्यादिना' (651) से तिप् सहित अस् को अत्थि आदेश
सो (देखें सू. 416)

⊙ अत्थि ते (सन्ति ते) ते (देखें सू. 416)
अत्थि तुवं (असि त्वं) तुवं (देखें सू. 492)
अत्थि तुम्हे (स्थ यूयम्) तुम्हे (देखें सू. 494)
अत्थि अम्हे (अस्मि अहम्) अहं (देखें सू. 507)
अत्थि अम्हे (स्मः वयम्) अम्हे (देखें सू. 508)
आदि रूप भी इसी प्रकार बनेंगे।

652. सिनास्तेः सिः 3/146

सिना सह अस्तेः सिरादेशः स्यात्। सि। सिना इति किम्? से आदेशे अत्थि तुवं।

■ सि सहित अस्ति को सि आदेश होता है।

⊙ सि (असि)
अस् + सि
'सिनास्तेः सिः' (652) से सि सहित अस् को सि आदेश
सि सहित ऐसा क्यों? सूत्रकार का कहना है कि 'द्वितीयस्य सि से' (622) से सिप् को से आदेश होता है, उसके साथ कहीं अस् धातु को सि आदेश न हो जाए इसलिए 'सिना' पद प्रयुक्त किया गया है।

⊙ अत्थि तुवं (असि त्वम्)
अस् + सिप्
'द्वितीयस्य सि से' (622) से सिप् को से

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

'अत्थिस्त्यादिना' (651) से से सहित अस् को अत्थि आदेश
तुवं (देखें सू. 492)

653. मि-मो मैर्म्हि-म्हो-म्हा वा 3/147

अस्तेधातोः स्थाने मि, मो, म इत्यादेशैः सह यथाक्रमं म्हि, म्हो, म्ह इत्यादेशा वा स्युः। म्हि, म्हो, म्ह। पक्षे — अत्थि।

⊙ म्हि (अस्मि)

अस् + मिप्

'तृतीयस्य मिः' (624) से तिप् को मि आदेश

'मि-मो-मैर्म्हि-म्हो-म्हा वा' (653) से मि सहित अस् को विकल्प से म्हि आदेश

⊙ म्हो, म्ह (स्मः)

अस् + मस्

'तृतीयस्य मो-मु-माः' (625) से मस् को मो, म आदेश

'मि-मो-मैर्म्हि.....' (653) से मो, म सहित अस् को विकल्प से क्रमशः म्हो, म्ह आदेश

■ अस् धातु से 'मस्' प्रत्यय के स्थान में 'मु' आदेश नहीं होता है, इसलिए यहां मु का ग्रहण नहीं किया गया है।

654. तेनास्तेरास्यहेसी 3/164

अस्तेर्धातोस्तेन भूतार्थप्रत्ययेन सह आसि, अहेसि इत्यादेशौ स्तः। आसि सो तुमं अहं वा। एवं अहेसि।

■ अस्ति धातु को उस भूतार्थ प्रत्यय सहित (दि, दिप्, णप्) आसि, अहेसि आदेश होते हैं।

⊙ आसि सो तुमं अहं वा (आसीत् सः त्वं अहं वा)

अहेसि (आसीत्)

अस् + दि, दिप्, णप्

'तेनास्तेरास्यहेसी' (654) से भूतार्थ प्रत्यय सहित अस् धातु को आसि, अहेसि आदेश

655. चि-जि-श्रु-हु-स्तु-लू-पू-धूगां णो ह्रस्वश्च 4/241

च्यादीनां धातूनामन्ते णकारागमः एषां स्वरस्य ह्रस्वश्च स्यात्। चिणइ, जिणइ। बाहुलकाद् क्वचिद् विकल्पः — उच्चेइ जयइ।

■ चि आदि (जि, श्रु, हु, स्तु, लू, पू और धूग्) धातुओं के अन्त में णकार का आगम होता है और इनके स्वर को Ð्स्व हो जाता है।

⊙ चिणइ (चिनोति—इकट्ठा करता है।)

चि + तिप्

'चि-जि-श्रु-हु.....'(655) से धातु के अंत में णकार का आगम

चि + ण + तिप्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

'त्यादीना.....'(617) से तिप् को इच् आदेश
च् अनुबंध जाने पर
वर्ण-सम्मेलन करने पर

⊙ जिणइ (जयति—जितता है)
जि + तिप्
शेष प्रक्रिया चिणइ की तरह

■ बहुलता के कारण क्वचिद् णकार का आगम विकल्प से होता है —

⊙ उच्चिणइ, उच्चेइ (उच्चिनोति)
उत्चि + तिप्
'क-ग-ट-ड.....' (13) से त् का लोप
'अनादौ.....' (6) से च् को द्वित्व
'चि-जि-श्रु.....' (655) से बहुलता से धातु के अंत में णकार का आगम
शेष प्रक्रिया चिणइ की तरह
पक्ष में — णकार के आगम के अभाव में
'युवर्णस्य गुण:' (663) से इ को गुण (ए) करने पर उच्चेइ बनेगा।

⊙ जयइ (जयति)
जि + तिप्
'युवर्णस्य गुण:' (663) से इ को गुण (ए)
संस्कृतव्याकरण के नियमानुसार ए को अय्
जय् + तिप्
'व्य×जनाददन्ते' (638) से धातु के अंत में अ
शेष प्रक्रिया हुवइ की तरह

656. श्रुटेर्हण: 4/58

श्रुटेर्हण इत्यादेशो वा स्यात्। हणइ, पक्षे—सुणइ। सुणाउ।

■ शृणोति को हण आदेश विकल्प से होता है।

⊙ हणइ, सुणइ (शृणोति — सुनता है)
श्रु + तिप्
'श्रुटेर्हण:' (656) से श्रु धातु को विकल्प से हण् आदेश
शेष हुवइ (सू. 640) की तरह
पक्ष में —'सर्वत्र.....' (9) से र् का लोप
'शषो: स:' (16) से श् को स्
'चि-जि-श्रु.....'(655) से धातु के अंत में ण का आगम
शेष प्रक्रिया चिणइ की तरह करने पर सुणइ रूप बनेगा।

⊙ सुणाउ (शृणोतु)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

श्रु + तुप्

सुण (ऊपरवत्) तुप्

'दु सु मु.....' (626) से तुप् को दु आदेश

सुण + दु

बहुलता के कारण अ को आ करने पर

वर्ण-सम्मेलन करने पर 'क-ग-च-ज.....' (17) से द् का लोप

657. सोच्छादय इजादिषु हिलुक् च वा 3/172

श्रवादीनां स्थाने इजादिषु भविष्यदादेशेषु यथासंख्यं सोच्छादयः स्युः, हिलुक् च वा। सोच्छिइ। पक्षे — सोच्छिहिइ। एवं सोच्छिंति, सोच्छिहिंति। सोच्छिसि, सोच्छिहिसि। सोच्छित्था, सोच्छिहित्था। सोच्छिह, सोच्छिहिह।

■ भविष्यत्कालीन इच् आदि आदेशों के परे होने पर श्रु आदि (सू. 658 में उक्त) के स्थान पर क्रमशः सोच्छ् आदि आदेश होते हैं और विकल्प से हि का लुक् होता है।

⊙ सोच्छिइ, सोच्छिहिइ (श्रोष्यति)

श्रु + स्यति

'त्यादीना.....' (617) से स्यति को इच्

'भविष्यति हिरादिः' (631) से प्रत्यय से पहले हि का प्रयोग

श्रु हि इच्

'सोच्छादय इजादिषु हिलुक् च वा' (657) से श्रु धातु को सोच्छ् आदेश तथा विकल्प से हि का लुक्

सोच्छ् + इच्

'व्यञ्जना.....' (638) धातु के अंत में अ

'एच्च क्त्वा.....' (645) से अ को इ

च् अनुबंध जाने पर

पक्ष में—विकल्प से हि का लुक् नहीं करेंगे वहां सोच्छिहिइ बनेगा।

⊙ सोच्छिन्ति, सोच्छिहिन्ति (श्रोष्यन्ति)

श्रु + स्यन्ति

'बहुष्वाद्यस्य.....' (621) से स्यन्ति को न्ति

श्रु + न्ति

शेष प्रक्रिया ऊपरवत्

⊙ सोच्छिसि, सोच्छिहिसि (श्रोष्यसि)

श्रु + स्यसि

'द्वितीयस्य....' (622) से स्यसि को सि

श्रु + सि

शेष प्रक्रिया ऊपरवत्

⊙ सोच्छित्था, सोच्छिहित्था, सोच्छिह, सोच्छिहिह (श्रोष्यथ)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

श्रु + स्यथ

'मध्यमस्येत्था-हचौ' (623) से स्यथ को इत्था, ह आदेश

शेष प्रक्रिया ऊपरवत्

सोच्छित्था, सोच्छिहित्था में 'लुक्' (235) से पूर्वस्वर इ का लोप होगा।

658. श्रु-गमि-रुदि-विदि-दृशि-मुचि-वचि-छिदि-भिदि-भुजांसोच्छं गच्छं रोच्छं वेच्छं दच्छं मोच्छं वोच्छं छेच्छं भेच्छं भोच्छं 3/171

श्रवादीनां धातूनां भविष्यद्विहितम्यन्तानां स्थाने सोच्छं इत्यादयो वा निपात्यन्ते। सोच्छं। पक्षे — सोच्छिमि, सोच्छिहिमि, सोच्छिस्सामि, सोच्छिहामि, सोच्छिस्सं। सोच्छिमो, सोच्छिहिमो, सोच्छिस्सामो, सोच्छिहामो। सोच्छिहिस्सा, सोच्छिहित्था। एवं मुमयोरपि। हुणइ, थुणइ, लुणइ, पुणइ।

■ श्रु आदि धातुओं के भविष्यत् विहित मि अन्त के स्थान में सोच्छं आदि निपात से सिद्ध होते हैं।

⊙ सोच्छं, सोच्छिमि, सोच्छिहिमि, सोच्छिस्सामि, सोच्छिहामि, सोच्छिस्सं (श्रोस्यामि)

श्रु + स्यामि

'तृतीयस्य मिः' (624) से स्यामि को मि आदेश

'श्रु-गमि-रुदि.....' (658) से मि प्रत्यय सहित श्रु धातु को विकल्प से सोच्छं आदेश

पक्ष में — श्रु + मि

'सोच्छादय.....' (657) से श्रु को सोच्छ् आदेश तथा विकल्प से हि का लुक्

शेष प्रक्रिया ऊपरवत् करने पर सोच्छिमि, सोच्छिहिमि रूप बनेगा।

'मि-मो-मु-मे.....' (633) से विकल्प से मि से पूर्व स्सा, हा का आगम करने पर सोच्छिस्सामि, सोच्छिहामि बनेगा।

'मेः स्सं' (632) से विकल्प से मि को स्सं करने पर सोच्छिस्सं बनेगा।

⊙ सोच्छिमो, सोच्छिहिमो, सोच्छिस्सामो, सोच्छिहामो, सोच्छिहिस्सा, सोच्छिहित्था (श्रोष्यामः)

श्रु + स्यामस्

'तृतीयस्य मो-मु-माः' (625) से स्यामस् को मो आदेश

शेष प्रक्रिया ऊपरवत् करने पर सोच्छिमो, सोच्छिहिमो, सोच्छिस्सामो, सोच्छिहामो बनेगा।

'मो-मु-मानां हिस्सा हित्था' (634) से मो के स्थान पर विकल्प से हिस्सा, हित्था आदेश करने पर सोच्छिहिस्सा, सोच्छिहित्था बनेगा।

⊙ हुणइ (जुहोति — होम करता है)

थुणइ (स्तौति — स्तुति करता है)

लुणइ (लुनाति — काटता है)

पुणइ (पुनाति — पवित्र करता है, धान्य आदि को तुवरहित करता है)

हु + तिप्, स्तु + तिप्, लू + तिप्, पू + तिप्

शेष प्रक्रिया चिणइ (सू. 655) की तरह

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

थुणइ में 'स्तस्य थोऽसमस्तस्तम्बे' (87) से स्त् को थ् होगा।

659. धुणेर्धुवः 4/59

धुनोर्धुव इत्यादेशो वा स्यात्। धुवइ। पक्षे — धुणइ। गम्यादीनां भविष्यति श्रुवत्।

■ धू को धुव आदेश विकल्प से होता है।

⊙ धुवइ, धुणइ (धुनोति — काम्पता है)

धू + तिप्

'धुणेर्धुवः' (659) से धू को विकल्प से धुव् आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — धुणइ (लुणइ की तरह)

660. ऋवर्णस्यारः 4/234

धातोरन्त्यस्य ऋवर्णस्य अरादेशः स्यात्। हरइ, तरइ।

■ धातु के अन्तिम ऋवर्ण को अर् आदेश होता है।

⊙ हरइ (हरति — हरण करता है)

ह + तिप्

'ऋवर्णस्यारः' (660) से ऋ को अर्

शेष पूर्ववत्

⊙ तरइ (तरति — तरता है)

तृ + तिप्

'ऋवर्णस्यारः' (660) से ऋ को अर् आदेश

तर् + तिप्

शेष पूर्ववत्

661. वृषादीनामरिः 4/235

वृष इत्येवं प्रकाराणां धातूनां ऋवर्णस्य अरिरित्यादेशः स्यात्। वरिसइ, करिसइ, दरिसइ।

■ वृष् इस प्रकार की धातुओं के ऋवर्ण को अरि आदेश होता है।

⊙ वरिसइ (वर्षति — बरसता है)

⊙ करिसइ (कर्षति — खींचता है)

⊙ दरिसइ (दृश्यते — दिखलाता है)

वृष् + तिप्, कृष् + तिप्, दृश + तिप्

'वृषादीनामरिः' (661) से ऋ को अरि आदेश

'शषोः सः' (16) से ष् एवं श् को स्

शेष पूर्ववत्

662. रुषादीनां दीर्घः 4/236

रुष इत्येवं प्रकाराणां धातूनां स्वरस्य दीर्घः स्यात्। रूसइ, तूसइ, पूसइ, सीसइ।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

■ रुष् इस प्रकार की धातुओं के स्वर को दीर्घ होता है।

⊙ रूसइ (रुष्यति — गुस्सा करता है)

⊙ तूसइ (तुष्यति — खुश होता है)

⊙ पूसइ (पुष्यति — पुष्ट होता है)

⊙ सीसइ (शेषति — वध करता है)

इन सभी धातु रूपों में

रुष् + तिप्, तुष् + तिप्, पुष् + तिप्, शिष् + तिप्

'रुषादीनां दीर्घः' (662) से स्वर (उ, इ) को दीर्घ

'शषोः सः' (16) स ष् एवं श् को स्

शेष पूर्ववत्

663. युवर्णस्य गुणः 4/237

धातोरिवर्णोस्योवर्णस्य च क्ङित्यपि गुणः स्यात्। नेइ, नेन्ति, मोएइ, मोएन्ति।

■ धातु के इवर्ण और उवर्ण को कित्, ङित्, अप् परे होने पर गुण होता है।

⊙ नेइ (नयति — ले जाता है)

नी + तिप्

'युवर्णस्य गुणः' (663) से ई को गुण (ए)

शेष प्रक्रिया होइ (सू. 619) की तरह

नेन्ति (नयन्ति)

नी + अन्ति

'युवर्णस्य गुणः' (663) से ई को गुण

'बहुष्वाद्यस्य.....' (621) से अन्ति को न्ति

ने + न्ति

वर्ण-सम्मेलन करने पर

⊙ मोएइ (मुञ्चति — मुक्त होता है)

मुच् + तिप्

'युवर्णस्य गुणः' (663) से उ को गुण (ओ)

'व्यंजनाददन्ते' (638) से धातु के अंत में अ

मुच + तिप्

'क-ग-च-ज-त....' (17) से च् का लुक्

'वर्तमाना.....' (640) से विकल्प से अ को ए

'त्यादीना.....' (617) से तिप् को इच्

च् अनुबंध जाने पर तथा वर्णसम्मेलन करने पर

⊙ मोएन्ति (मुञ्चन्ति)

मुच् + अन्ति

मोए (पूर्ववत्) + अन्ति

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

'बहुष्वाद्यस्य.....' (621) से अन्ति को न्ति
वर्ण-सम्मेलन करने पर

664. इदितो वा 4/1

सूत्रे ये इदितो धातवो वक्ष्यन्ते तेषां ये आदेशास्ते विकल्पेन स्युः।

सूत्र में जो इ इत् जाये वैसी धातुएं कही जायेगी उनको जो आदेश होते हैं, वे विकल्प से होते हैं।

665. कथेर्वज्जर-पज्जरोप्पाल-पिसुण-संघ-बोल्ल-चव-जम्प-सीस-साहाः 4/2

कथेर्धातोर्वज्जरादयो दशादेशा वा स्युः। वज्जरइ, पज्जरइ, उप्पालइ, पिसुणइ, संघइ, बोल्लइ, चवइ, जम्पइ, सीसइ, साहइ। पक्षे — कहइ।

■ कथि धातु को वज्जर आदि दस आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ वज्जरइ, पज्जरइ, उप्पालइ, पिसुणइ, संघइ, बोल्लइ, चवइ, जम्पइ, सीसइ, साहइ, कहइ (कथयति — कहता है)

कथ् + तिप्

'कथेर्वज्जर-पज्जरोपाल.....' (665) से कथ् को विकल्प से वज्जर् आदि आदेश
व्यंजनाददन्ते.....' (638) से धातु के अंत में अ का आगम
'त्यादीना.....' (617) से तिप् को इच्
च् अनुबंध जाने पर
वर्ण-सम्मेलन करने पर
पक्ष में — 'ख-घ-थ-ध-भाम्' (30) से थ् को ह् करने पर कहइ बनेगा।

666. दुःखे णिव्वरः 4/3

दुःखविषयकथेर्णिव्वर इत्यादेशो वा स्यात्। णिव्वरइ।

■ दुःखविषयक कथ् को णिव्वर आदेश विकल्प से होता है।

⊙ णिव्वरइ (दुःखं कथयति — दुःख कहता है)

कथ् + तिप्

'दुःखे णिव्वरः' (666) से विकल्प से दुःखविषयक कथ् को णिव्वर् आदेश
शेष पूर्ववत्

667. जुगुप्सेर्झुण-दुगुच्छ-दुगुंछाः 4/4

जुगुप्सेरेते त्रय आदेशा वा स्युः। झुणइ, दुगुच्छइ, दुगुञ्छइ। पक्षे — जुगुच्छइ।

■ जुगुप्सि को झुण, दुगुच्छ और दुगुञ्छ — ये तीन आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ झुणइ, दुगुच्छइ, दुगुञ्छइ, जुगुच्छइ (जुगुप्सति — घृणा करता है, निन्दा करता है)

जुगुप्स् + तिप्

जुगुप्सेर्झुण-दुगुच्छ-दुगुञ्छाः' (667) से जुगुप्सि को विकल्प से झुण् आदि आदेश
शेष पूर्ववत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

पक्ष में — 'ह्रस्वात् थ्य-श्च-त्स-प्सामनिश्चले' (40) से प्स् को छ्
'अनादौ.....' (6) से छ् को द्वित्व
'द्वितीय.....' (14) से पूर्व छ् को च् करने पर जुगुच्छइ बनेगा।

668. बुभुक्षि-वीज्योर्णीरव-वोज्जौ 4/5

अनयोर्यथासंख्यमेतावादेशौ वा स्तः। णीरवइ, बुहुक्खइ। वोज्जइ, वीजइ।

■ बुभुक्षि और वीजि धातु को यथासंख्य णीरव और वोज्ज आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ णीरवइ, बुहुक्खइ (बुभुक्षति — खाना चाहता है)
बुभुक्ष् + तिप्
'बुभुक्षि-वीज्योर्णीरव-वोज्जौ' (668) से बुभुक्षि को विकल्प से णीरव् आदेश
शेष पूर्ववत्
पक्ष में — 'ख-घ-थ-ध-भाम्' (30) से भ् को ह्
'क्षः खः.....' (26) से क्ष् को ख्
'अनादौ.....' (6) से ख् को द्वित्व
'द्वितीय.....' (14) से पूर्व ख् को क् करने पर बुहुक्खइ बनेगा।

⊙ वोज्जइ, वीजइ (वीजयति — हवा करता है)
वीज् + तिप्
'बुभुक्षि.....' (668) से वीजि को विकल्प से वोज्ज् आदेश
शेष पूर्ववत्
पक्ष में — वीजइ

669. ध्या-गोर्झा-गौ 4/6

अनयोर्यथासंख्यं झा, गा इत्यादेशौ स्तः। झाइ, झाअइ। गाइ, गाअइ।

■ ध्यै, गै धातुओं को यथासंख्य झा, गा आदेश होते हैं।

⊙ झाइ, झाअइ (ध्यायति — चिन्तन करता है)

⊙ गाइ, गाअइ (गायति — शब्द करता है)
ध्यै + तिप्, गै + तिप्
'ध्या-गोर्झा गौ' (669) से ध्यै को झा एवं गै को गा आदेश
शेष पूर्ववत्
झाअइ, गाअइ में 'स्वरादनतो वा' (619) से विकल्प से धातु के अंत में अकार का आगम हुआ है।

670. ज्ञो जाण-मुणौ 4/7

जानातेरेतौ आदेशौ स्तः। जाणइ, मुणइ। बहुलाधिकारात् क्वचिद् विकल्पः जाणिअं, णायं।

■ जानाति को जाण और मुण आदेश होते हैं।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

⊙ जाणइ, मुणइ (जानाति — जानता है)

ज्ञा + तिप्

'ज्ञो जाण-मुणौ' (670) से ज्ञा को जाण्, मुण् आदेश

शेष पूर्ववत्

■ बहुलाधिकार के कारण कहीं विकल्प से होता है।

⊙ जाणिअं, णायं (ज्ञातं — जाना हुआ)

ज्ञा + क्त + सि

ज्ञो जाण-मुणौ' (670) से विकल्प से ज्ञा को जाण् आदेश

'व्यंजनाददन्ते' (638) से धातु के अंत में अ का आगम

'क्ते' (921) से अ को इ

क् अनुबंध जाने पर

'क-ग-च-ज.....' (17) से त् का लोप

'क्लीबे स्वरान्म् से:' (487) से सि को म्

'मोनुस्वार:' (399) से म् को अनुस्वार

वर्ण-सम्मेलन करने पर

पक्ष में — जहां जाण् आदेश नहीं करेंगे वहां 'म्नज्ञोर्ण:' (47) से ज्ञ् को ण् तथा 'अवर्णो य-श्रुति:' (19) से य-श्रुति करने पर णायं बनेगा।

671. उदोध्मो-धुमा 4/8

उद: परस्य ध्मा धातोर्धुमा इत्यादेश: स्यात्। उद्धुमाइ।

■ उद् उपसर्ग से परे ध्मा धातु को धुमा ओदश होता है।

⊙ उद्धुमाइ (उद्धमति — जोर से धमनी चलाता है)

उद्ध्मा + तिप्

'अनत्यव्यंजनस्य' (42) से द् के लोप की प्राप्ति किन्तु 'न श्रदुदो:' (246) से निषेध

'उदो ध्मो-धुमा' (671) से ध्मा को धुमा आदेश

शेष पूर्ववत्

672. श्रदो धो दह: 4/9

श्रद: परस्य दधातेर्दह इत्यादेश: स्यात्। सद्दहइ।

■ श्रद् से परे दधति को दह आदेश होता है।

⊙ सद्दहइ (श्रद्दधाति — श्रद्धा करता है)

श्रद्धा + तिप्

'शषो: स:' (16) से श् को स्

'सर्वत्र.....' (9) से र् का लोप

'अन्त्यव्यंजनस्य' (42) से द् के लोप की प्राप्ति

'न श्रदुदो:' (246) से द् के लोप का निषेध

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

'श्रद्धो धो दहः' (672) से धा को दह् आदेश
शेष पूर्ववत्

673. पिबेः पिज्ज-डल्ल-पट्ट-घोट्टाः 4/10

पिबतेरेते चत्वार आदेशा वा स्युः। पिज्जइ, डल्लइ, पट्टइ, घोट्टइ। पक्षे — पिअइ।

■ पिबति को पिज्ज, डल्ल, पट्ट, घोट्ट — ये चार आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ पिज्जइ, डल्लइ, पट्टइ, घोट्टइ, पिअइ (पिबति — पीता है)

पा + तिप्

'पिबेः पिज्ज-डल्ल-पट्ट-घोट्टाः' (673) से विकल्प से पा को पिज्ज् आदि आदेश
शेष पूववत्

पक्ष में — पिब + तिप् (संस्कृतवत्)

'क-ग-च...' (17) ब् का लुक् करने पर पिअइ बनेगा।

674. उद्वातेरोरुम्मा वसुआ 4/11

उत्पूर्वस्य वातेरेतौ आदेशौ वा स्तः। ओरुम्माइ, वसुआइ। पक्षे — उव्वाइ।

■ उद् पूर्वक वाति को ओरुम्मा और वसुआ आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ ओरुम्माइ, वसुआइ, उव्वाइ (उद्वाति — शुष्क होता है, सूखता है)

उद्वा + तिप्

'उद्वातेरोरुम्मा वसुआ' (674) से उद्वा को विकल्प से ओरुम्मा, वसुआ आदेश
शेष पूर्ववत्

पक्ष में — 'अन्त्यव्यंजनस्य' (42) से द् के लोप की प्राप्ति

'न श्रदुदोः' (246) से निषेध किन्तु

'क-ग-ट-ड.....' (13) से द् का लुक् तथा

'अनादौ.....' (6) से व् को द्वित्व करने पर उव्वाइ बनेगा।

675. निद्रातेरोहीरोङ्घौ 4/12

निद्रातेः ओहीर, उङ्घ इत्यादेशौ वा स्तः। ओहीरइ, उङ्घइ। पक्षे — निद्दाइ।

■ निद्राति को ओहीर और उङ्घ आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ ओहीरइ, उङ्घइ, निद्दाइ (निद्राति — नींद लेता है)

निद्रा + तिप्

'निद्रातेरोहीरोङ्घौ' (675) से विकल्प से निद्रा को ओहीर्, उङ्घ् आदेश
शेष पूर्ववत्

पक्ष में — 'सर्वत्र.....' (9) से र् का लोप तथा 'अनादौ.....' (6) से द् को द्वित्व करने पर निद्दाइ बनेगा।

676. आघ्रेराइग्घः 4/13

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

आजिघ्रतेः आइग्घ इत्यादेशो वा स्यात्। आइग्घइ। पक्षे — अग्घाइ।

■ आजिघ्रति को आइग्घ आदेश विकल्प से होता है।

⊙ आइग्घइ अग्घाइ (आजिघ्रति — सूंघता है)

आघ्रा + तिप्

'आघ्रेराइग्घः' (676) से आघ्रा को विकल्प से आइग्घ् आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — आघ्रा + तिप्

'सर्वत्र.....' (9) से र् का लोप

'अनादौ....' (6) से घ् को द्वित्व

'द्वितीय.....' (14) से पूर्व घ् को ग्

ह्रस्वः संयोगे' (12) से आ को ह्रस्व (अ) करने पर अग्घाइ बनेगा।

677. स्नातेरब्भुत्तः 4/14

स्नातेरब्भुत्त इत्यादेशो वा स्यात्। अब्भुत्तइ। पक्षे — ण्हाइ।

■ स्नाति को अब्भुत्त आदेश विकल्प से होता है।

⊙ अब्भुत्तइ, ण्हाइ (स्नाति — स्नान करता है)

ष्णा + तिप्

'स्नातेरब्भुत्तः' (677) से ष्णा को विकल्प से अब्भुत्त् आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — 'सूक्ष्म श्न-ष्ण.....' (10) से ष्ण् को ण्ह् करने पर ण्हाइ बनेगा।

678. समः स्त्यः खाः 4/15

संपूर्वस्य स्त्यायतेः खा इत्यादेशः स्यात्। संखाइ।

■ सम् पूर्वक स्त्यायति को खा आदेश होता है।

⊙ संखाइ (संस्त्यायति — आवाज करता है, संहत होता है)

संस्त्यै + तिप्

'समः स्त्यः खाः' (678) से स्त्यै को खा आदेश

शेष पूर्ववत्

679. स्थष्ठा-थक्क-चिट्ठ-निरप्पाः 4/16

तिष्ठतेरेते चत्वार आदेशाः स्युः। ठाइ, ठाअइ। थक्कइ, चिट्ठइ, निरप्पइ। बहुलाधिकारात् क्वचिन्न भवति — थिअ, थाणं।

■ तिष्ठति को ठा, थक्क, चिट्ठ, निरप्प — ये चार आदेश होते हैं।

⊙ ठाइ, ठाअइ, थक्कइ, चिट्ठइ, निरप्पइ (तिष्ठति — ठहरता है)

स्था + तिप्

'स्थष्ठा-थक्क.....' (679) से ष्ठा को ठा, थक्क् आदि आदेश

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शेष पूर्ववत्

ठाअइ में 'स्वरादनतो वा' (619) से अ का आगम हुआ है।

■ बहुलाधिकार के कारण कहीं नहीं होता है —

⊙ थिअं (स्थितम् — ठहरा हुआ)

⊙ थाणं (स्थानम् — स्थान)

स्थित + सि, स्थान + सि

'क-ग-ट-ड.....' (13) से स् का लोप

सि की प्रक्रिया णायं (670) की तरह

थिअं में 'क-ग-च.....' (17) से त् का लोप तथा थाणं में 'नो णः' (28) से न् को ण् हुआ है।

680. उदष्ठ-कुक्करौ 4/17

उदः परस्य तिष्ठतेः ठ, कुकुकर इत्यादेशौ स्तः। उट्ठइ, उक्कुक्कुरइ।

■ उद् से परे तिष्ठति को ठ, कुक्कुर आदेश होते हैं।

⊙ उट्ठइ, उक्कुक्कुरइ (उत्तिष्ठति — उठता है, खड़ा होता है)

उद्स्था + तिप्

'उदष्ठ-कुक्कुरौ' (680) से स्था को ठ्, कुक्कुर आदेश

'अन्त्य....' (42) से द् के लोप की प्राप्ति

'न श्रदुदोः' (246) से निषेध

'क-ग-ट.....' (13) से द् का लोप

'अनादौ.....' (6) से ठ् एवं क् को यथासंख्य द्वित्व

'द्वितीय.....' (14) से पूर्व ठ् को क्

शेष पूर्ववत्

681. म्लेर्वा-पव्वायौ 4/18

लायतेर्वा-पव्वाय इत्यादेशौ वा स्तः। वाइ, पव्वायइ। पक्षे — मिलाइ।

■ म्लायति को वा और पव्वाय आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ वाइ, पव्वायइ, मिलाइ (म्लायति — म्लान होता है)

म्लै + तिप्

'म्लेर्वा-पव्वायौ' (681) से विकल्प से म्लै को वा और पव्वाय् आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — म्ला (संस्कृतवत्) + तिप्

'लात्' (332) से ल् से पूर्व इकार का आगम करने पर मिलाइ बनेगा।

682. निर्मो निम्माण-निम्मवौ 4/19

नः पूर्वस्य मिमीतेरेतौ आदेशौ स्तः। निम्माणइ, निम्मवइ।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

■ निर्पूर्वक मा को निम्माण और निम्मव आदेश होते हैं।

⊙ निम्माणइ, निम्मवइ (निर्मिमीते — निर्माण करता है)

निर्मा + तिप्

'निर्मो निम्माण-निम्मवौ' (682) से निर्मा को निम्माण्, निम्मव् आदेश

शेष पूर्ववत्

683. क्षेर्णिज्झरो वा 4/20

क्षयतेर्णिज्झर इत्यादेशो वा स्यात्। णिज्झरइ। पक्षे — झिज्जइ।

■ क्षयति को णिज्झर आदेश विकल्प से होता है।

⊙ निज्झरइ, झिज्जइ (क्षयति — नष्ट होता है)

क्षि + तिप्

'क्षेर्णिज्झरो वा' (683) से क्षि को विकल्प से निज्झर् आदेश शेष पूर्ववत्

पक्ष में — 'क्षः खः.....' (26) से क्ष् को झ्

'मध्ये च स्वरान्ताद् वा' (618) से धातु और प्रत्यय के बीच ज्ज का आगम करने पर झिज्जइ बनेगा।

684. क्रियः किणो वेस्तु क्के च 4/52

क्रीणातेः किण इत्यादेशः स्यात्। वेः परस्य तु द्विरुक्तः क्के, चात् किणश्च। किणइ, विक्केइ, विक्किणइ।

■ क्रीणाति को किण आदेश होता है। वि से परे क्रीणाति को द्विरुक्त क्के और च से किण होता है।

⊙ किणइ (क्रीणाति — खरीदता है)

क्री + तिप्

'क्रियः किणो वेस्तु क्के च' (684) से क्री को किण् आदेश

शेष पूर्ववत्

⊙ विक्केइ, विक्किणइ (विक्रीणति — बेचता है)

विक्री + तिप्

'क्रियः किणो....' (684) से क्री को क्के तथा किण् आदेश

शेष पूर्ववत्

विक्किणइ में 'अनादौ.....' (6) से क् को द्वित्व हुआ है।

685. भियो भा-बीहौ 4/53

बभेतेरेतावादेशौ स्तः। भाइ, बीहइ।

■ बिभेति को भा और बीह् आदेश होते हैं।

⊙ भाइ, बीहइ (बिभेति — डरता है)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

भी + तिप्

'भियो भा-बीहौ' (685) से भी को भा, बीह् आदेश

शेष पूर्ववत्

686. आलीङोल्ली 4/54

आलीयतेः अल्ली इत्यादेशः स्यात्। अल्लीअइ।

■ आलीयते को अल्ली आदेश होता है।

⊙ अल्लीअइ (आलीयते — आलिंगन करता है, आता है)

आली + तिप्

'आलीङोल्ली' (686) से आली को अल्ली आदेश

'स्वरादनतो वा' (619) से अ का आगम

शेष पूर्ववत्

687. निलीङेर्णिलीअ-णिलुक्क-णिरिग्घ-लुक्क-लिक्क-ल्हिक्काः 4/55

नलीङेरेते षडादेशा वा स्युः। णिलीअइ, णिलुक्कइ, णिरिग्घइ, लुक्कइ, लिक्कइ, ल्हिक्कइ। पक्षे — निलिज्जइ।

■ नि पूर्वक लीङ् को णिलीअ आदि छ आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ णिलीअइ, णिलुक्कइ, णिरिग्घइ, लुक्कइ, लिक्कइ, ल्हिक्कइ, निलिज्जइ (निलीयते — छिपता है)

निली + तिप्

'निलीङेर्णिलीअ.....' (687) से विकल्प से निली को णिलीअ आदि आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — 'मध्ये च.....' (618) से धातु और प्रत्यय के बीच ज्ज का आगम तथा 'ह्रस्वः संयोगे' (6) से ई को ह्रस्व करने पर निलिज्जइ बनेगा।

688. विलीङेर्विरा 4/56

वलीङेर्विरा इत्यादेशो वा स्यात्। विराइ। पक्षे — विलिज्जइ।

■ वि पूर्वक लीङ् को विरा आदेश विकल्प से होता है।

⊙ विराइ, विलिज्जइ (विलीयते — नष्ट होता है, निवृत्त होता है)

विली + तिप्

'विलीङेर्विरा' (688) से विली को विकल्प से विरा आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — विलिज्जइ (निलिज्जइ की तरह)

689. रुते रुञ्ज-रुण्टौ 4/57

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

रौतेरेतावादेशौ वा स्यात्। रुञ्जइ, रुण्टइ। पक्षे — रवइ।

■ रौति को रुञ्ज, रुण्ट आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ रुञ्जइ, रुण्टइ, रवइ (रौति — शब्द करता है)

रु + तिप्

'रुते रुञ्ज-रुण्टौ' (689) से रु को विकल्प से रुञ्ज्, रुण्ट् आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — 'उवर्णस्याव:' (647) से उ को अव् करने पर रवइ बनेगा।

690. कृगे: कुण: 4/65

कृगे: कुण इत्यादेशौ वा स्यात्। कुणइ। पक्षे — करइ।

■ कृ को कुण आदेश विकल्प से होता है।

⊙ कुणइ, करइ (करोति — करता है)

कृ + तिप्

'कृगे: कुण:' (690) से कृ को कुण् आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — 'ऋवर्णसयार:' (660) से ऋ को अर् करने पर करइ बनेगा।

691. आ: कृगो भूत-भविष्यतोश्च 4/214

कृगोऽन्त्यस्य आ इत्यादेश: स्यात् भूतभविष्यतोश्चात् क्त्वातुम्-तव्येषु च। काहीअ, काहिइ।

■ कृ के अन्त्य को आ आदेश होता है भूतकालीन, भविष्यत्कालीन, क्त्वा, तुम् और तव्य प्रत्यय परे होने पर।

⊙ काहीअ (अकरोत्, अकार्षीत्, चकार वा)

कृ + दिप्, कृ + दि, कृ + णप्

'आ: कृगो भूत.....' (691) से ऋ को आ

'सी ही हीअ....' (630) से भूतार्थक प्रत्ययों को हीअ आदेश

वर्ण-सम्मेलन करने पर

⊙ काहिइ (करिष्यति)

कृ + स्यति

'आ: कृगो....' (691) से ऋ को आ

शेष होहिइ (सू. 631) की तरह

692. कृ-दो हं 3/170

अनयो: परो भविष्यतिविहितस्य म्यादेशस्य स्थाने हं वा प्रयोज्य:। काहं, दाहं। पक्षे— काहिमि, दाहिमि।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

■ कृ और दा से परे भविष्यत्कालीन विहित मि आदेश के स्थान में हं विकल्प से प्रयुक्त करना चाहिए।

⊙ काहं, काहिमि (करिष्यामि)

कृ + स्यामि

'आः कृगो.....' (691) से ऋ को आ

'तृतीयस्य मिः' (624) से स्यामि को मि

'कृ-दो-हं' (692) से मि को विकल्प से हं

पक्ष में — काहिमि (होहिमि सू. 633) की तरह

⊙ दाहं, दाहिमि (दास्यामि — देगा)

दा + स्यामि

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — दाहिमि (ऊपरवत्)

693. काणेक्षिते णिआरः 4/66

काणेक्षितविषयस्य कृगो णिआर इत्यादेशो वा स्यात्। णिआरइ।

■ काणेक्षित विषयक (कानी दृष्टि से देखने के विषय में) कृग् को निआर आदेश विकल्प से होता है।

⊙ णिआरइ (काणोक्षितं करोति — कानी दृष्टि से देखता है)

कृ+ तिप्

'काणेक्षिते णिआरः' (693) से काणेक्षित कृ को विकल्प से णिआर् आदेश

शेष पूर्ववत्

694. निष्टम्भाऽवष्टम्भे णिट्ठुह-संदाणं 4/67

निष्टम्भाऽवष्टम्भविषयस्य कृगो यथासंख्यमेतावादेशौ स्तः। णिट्ठुहइ, संदाणइ।

■ निष्टम्भ (निश्चेष्ट) और अवष्टम्भ (अवलम्बन) विषयक कृग को यथासंख्य णिट्ठुह और संदाण आदेश होते हैं।

⊙ णिट्ठुहइ (निष्टम्भं करोति — चेष्टा रहित होता है)

⊙ संदाणइ (अवष्टम्भं करोति— सहारा लेता है)

कृ + तिप्

'निष्टम्भाऽवष्टम्भे णिट्ठुइ-संदाणं' (694) से निष्टम्भ विषयक कृ को णिट्ठुह एवं अवष्टम्भविषयक कृ को संदाण् आदेश

शेष पूर्ववत्

695. श्रमे वावम्फः 4/68

श्रमविषयस्य कृगो वावम्फ इत्यादेशो वा स्यात्। वावम्फइ।

■ श्रमविषयक कृग् को वावम्फ आदेश विकल्प से होता है।

⊙ वावम्फइ (श्रमं करोति — श्रम करता है)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

कृ + तिप्

'श्रमे वावम्फः' (695) से श्रमविषयक कृ को विकल्प से वावम्फ आदेश

शेष पूर्ववत्

696. मन्युनौष्ठमालिन्ये णिव्वोलः 4/69

अपरा धेनौष्ठमालिन्यविषयस्य कृगः पयल्ल इत्यादेशो वा स्यात्। पयल्लइ।

■ 'क्रोध से ओष्ठ को मलिन करना' विषयक कृग् को णिव्वोल आदेश विकल्प से होता है।

⊙ णिव्वोलइ (मन्युना ओष्ठं मलिनं करोति — क्रोध से ओष्ठ को मलिन करता है)

कृ + तिप्

'मन्युनौष्ठमालिन्ये णिव्वोलः' (696) से क्रोध से ओष्ठ मलिन विषयक कृग् को विकल्प से णिव्वोल् आदेश

शेष पूर्ववत्

697. शैथिल्य-लम्बने पयल्लः 4/70

शैथिल्यलम्बनविषयस्य कृगः पयल्ल इत्यादेशो वा स्यात्। पयल्लइ।

■ शैथिल्य और लम्बन विषयक कृग् को पयल्ल आदेश विकल्प से होता है।

⊙ पयल्लइ (शिथिलीभवति लम्बते वा — शिथिल होता है, लटकता है)

कृ + तिप्

'शैथिल्य-लम्बने पयल्लः' (697) से शैथिल्य और लम्बन विषयक कृ को विकल्प से पयल्ल् आदेश

शेष पूर्ववत्

698. निष्पाताच्छोटे णीलु×छः 4/71

निष्पाताच्छोटनविषयस्य कृगो णीलु×छ इत्यादेशो वा स्यात्। णीलु×छइ। पक्षे — णिप्पडइ, आछोडइ।

■ निष्पात (निष्पतन) और आच्छोटन विषयक कृग् को णीलु×छ आदेश विकल्प से होता है।

⊙ णीलु×छइ, णिप्पडइ, आछोडइ (निष्पतति आच्छोटयति वा — निष्पतन करता है, आच्छोटन करता है)

कृ + तिप्

'निष्पाताच्छोटे णीलुञ्छः' (698) से निष्पात, आच्छोटन विषयक कृग् को णीलुञ्छ् आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — निष्पत् + तिप्

'वादौ' (227) से विकल्प से न् को ण्

'क-ग-ट-ड.....' (13) से ष् का लुक्

'अनादौ.....' (6) से प् को द्वित्व

'सद-पतोर्डः' (849) से त् को ड्

शेष पूर्ववत् करने पर निप्पडइ बनेगा।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

699. क्षुरे कम्मः 4/72

क्षुरविषयस्य कृगः कम्म इत्यादेशो वा स्यात्। कम्मइ

■ क्षुरविषयक कृग् को कम्म आदेश विकल्प से होता है।

⊙ कम्मइ (क्षुरं करोति — क्षौर-कर्म करता है)

कृ + तिप्

'क्षुरे कम्मः' (699) से क्षुर विषयक कृ को विकल्प से कम्म् आदेश

शेष पूर्ववत्

700. चाटौ गुललः 4/73

चाटुविषयस्य कृगो गुलल इत्यादेशो वा स्यात्। गुललइ।

■ चाटुविषयक कृग् को गुलल आदेश विकल्प से होता है।

⊙ गुललइ (चाटु करोति — खुशामद करता है)

कृ + तिप्

'चाटौ गुललः' (700) से चाटु विषयक कृ को विकल्प से गुलल् आदेश

शेष पूर्ववत्

701. स्मरेर्झर-झूर-भर-भल-लढ-विम्हर-सुमर-पयर-पम्हुहाः 4/74

स्मरेरेते नवादेशा वा स्युः। झरइ, झूरइ, भरइ, भलइ, लढइ, विम्हरइ, सुमरइ, पयरइ, पम्हुहइ। पक्षे — सरइ।

■ स्मरति को झर, झूर आदि नव आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ झरइ, झूरइ, भरइ, भलइ, लढइ, विम्हरइ, सुमरइ, पयरइ, पम्हुहइ, सरइ (स्मरति — स्मरण करता है)

स्मृ + तिप्

'स्मरेर्झर-झूर-भर.....' (701) से स्मृ को विकल्प से स्मर् आदि आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — 'अधो मनयाम्' (5) से म् का लोप

'ऋवर्णस्यारः' (660) से ऋ को अर्

शेष पूर्ववत् करने पर सरइ बनेगा।

702. विस्मुः पम्हुस-विम्हर-वीसराः 4/75

विस्मरतेरेते आदेशाः स्युः। पम्हुसइ, विम्हरइ, वीसरइ।

■ विस्मरति को पम्हुस, विम्हर, वीसर आदेश होते हैं।

⊙ पम्हुसइ, विम्हरइ, वीसरइ (विस्मरति — भूलता है)

विस्मृ + तिप्

'विस्मुः पम्हुस-विम्हर-वीसराः' (702) से विस्मृ को पम्हुस् आदि आदेश

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शेष पूर्ववत्

703. व्याहृगेः कोक्क-पोक्कौ 4/76

व्याहरतेरेतावादेशौ वा स्तः। कोक्कइ। ह्रस्वत्वे तु कुक्कइ। पोक्कइ। पक्षे — वाहरइ।

■ व्याहरति को कोक्क और पोक्क आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ कोक्कइ, कुक्कइ, पोक्कइ, वाहरइ (व्याहरति — बुलाता है)

व्याह + तिप्

'व्याहृगेः कोक्क-पोक्कौ' (703) व्याह को विकल्प से कोक्क्, पोक्क् आदेश

शेष पूर्ववत्

'ह्रस्वः संयोगे' (12) से ओ को ह्रस्व (उ) करने पर कुक्कइ बनेगा।

पक्ष में — 'अधो मनयाम्' (5) से य् का लोप तथा

'ऋवर्णस्यारः' (660) से ऋ को अर् करने पर वाहरइ बनेगा।

704. प्रसरेः पयल्लोवेल्लौ 4/77

प्रसरतेरेतावादेशौ वा स्तः। पयल्लइ, उवेल्लइ। पक्षे — पसरइ।

■ प्रसरति को पयल्ल और उवेल्ल आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ पयल्लइ, उवेल्लइ, पसरइ (प्रसरति — फैलता है)

प्रसृ + तिप्

'प्रसरेः पयल्लोवेल्लौ' (704) से विकल्प से प्रसृ को पयल्ल्, उवेल्ल् आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — 'सर्वत्र.....' (9) से र् का लोप तथा

'ऋवर्णस्यारः' (660) से ऋ को अर् करने पर पसरइ बनेगा।

705. महमहो गन्धे 4/78

गन्धविषये प्रसरते महमह इत्यादेशो वा स्यात्। महमहइ मालई।

■ गन्ध विषयक प्रसरति को महमह आदेश विकल्प से होता है।

⊙ महमहइ मालई (प्रसरति — मालती की गंध फैलती है)

प्रसृ + तिप्

'महमहो गन्धे' (705) से प्रसृ को विकल्प से महमह् आदेश

शेष पूर्ववत्

मालई

मालती + सि

'क-ग-च-ज.....' (17) से त् का लुक्

इकार उच्चारण के लिए

'अन्त्यव्यंजनस्य' (42) से स् का लोप

706. निस्सरेर्णीहर-नील-धाड-वरहाडाः 4/79

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

निस्सरतेरेते चत्वार आदेशा वा स्युः। णीहरइ, नीलइ, धाडइ, वरहाडइ। पक्षे — नीसरइ।

■ निस्सरति को णीहर आदि चार आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ णीहरइ, नीलइ, धाडइ, वरहाडइ, नीसरइ (निस्सरति — निकलता है)

निस्सृ + तिप्

'निस्सरेर्णीहर-नील....' (706) से निस्सृ को विकल्प से णीहर् आदि आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — 'क-ग-ट-ड.....' (13) से स् का लुक्

'लुप्त य-र--व शषसां....' (15) से आदि स्वर (इ) को दीर्घ तथा

'ऋवर्णस्यारः' (660) से ऋ को अर् करने पर नीसरइ बनेगा।

707. जाग्रेर्जग्गः 4/80

जागर्तेर्जग्ग इत्यादेशो वा स्यात्। जग्गइ। पक्षे — जागरइ।

■ जागर्ति को जग्ग आदेश विकल्प से होता है।

⊙ जग्गइ, जागरइ (जागर्ति — जागता है)

जागृ + तिप्

'जाग्रेर्जग्गः' (707) से जागृ को विकल्प से जग्ग् आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — 'ऋवर्णस्यारः' (660) से ऋ को अर् करने पर जागरइ बनेगा।

708. व्याप्रेराअड्डः 4/81

व्याप्रियतेः आअड्ड इत्यादेशो वा स्यात्। आअड्डेइ, वावरेइ।

■ व्याप्रियते को आअड्ड आदेश विकल्प से होता है।

⊙ आअड्डेइ, वावरेइ (व्याप्रियते — काम में लगता है)

व्यापृ + तिप्

'व्याप्रेराअड्डः' (708) से व्यापृ को विकल्प से आअड्ड आदेश

शेष पूर्ववत्

'वर्तमाना-पञ्चमी....' (640) से अ को ए करने पर आअड्डेइ बनेगा।

पक्ष में — 'अधो मनयाम्' (5) से य् का लोप

'पो वः' (24) से प् को व् तथा

'ऋवर्णस्यारः' (660) से ऋ को अर्

'व्यंजनाददन्ते' (638) से धातु के अंत में अ तथा

'वर्तमाना...' (640) से अ को ए करने पर वावरेइ बनेगा।

709. संवृगेः साहर-साहट्टौ 4/82

संवृणोतेरेतावादेशौ वा स्तः। साहरइ, साहट्टइ। पक्षे — संवरइ।

■ संवृणोति को साहर और साहट्ट आदेश विकल्प से होते हैं।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

⊙ साहरइ, साहट्टइ, संवरइ (संवृणोति — संवरण करता है)

संवृ + तिप्

'संवृगेः साहर-साहट्टौ' (709) से संवृ को विकल्प से साहर्, साहट्ट् आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — संवरइ (ऋ को अर्)

710. आदृङेः सन्नामः 4/83

आद्रियतेः सन्नाम इत्यादेशो वा स्यात्। सन्नामइ। आदरइ।

■ आद्रियते को सन्नाम आदेश विकल्प से होता है।

⊙ सन्नामइ, आदरइ (आद्रियते — आदर करता है)

आदृ + तिप्

'आदृङेः सन्नामः' (710) से आदृ को विकल्प से सन्नाम् आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — आदरइ।

711. प्रहृगेः सारः 4/84

प्रहरतेः सार इत्यादेशो वा स्यात्। सारइ। पहरइ।

■ प्रहरति को सार आदेश विकल्प से होता है।

⊙ सारइ, पहरइ (प्रहरति — प्रहार करता है)

प्रहृ + तिप्

'प्रहृगेः सारः' (711) से प्रहृ को विकल्प से सार् आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — पहरइ।

712. अवतरेरोह-ओरसौ 4/85

अवतरतेरेतावादेशौ वा स्तः। ओहइ। ओरसइ। पक्षे — ओअरइ।

■ अवतरति को ओह और ओरस आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ ओहइ, ओरसइ, ओअरइ (अवतरति — नीचे उतरता है)

अवतृ + तिप्

'अवतरेरोह-ओरसौ' (712) से अवतृ को विकल्प से ओह्, ओरस् आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — 'अवापोते' (224) से अव को ओ

'ऋवर्णस्यारः' (660) से ऋ को अर्

'क-ग-च.....' (17) से त् को लोप करने पर ओअरइ बनेगा।

713. शकेश्चय-तर-तीर-पाराः 4/86

शक्नोतेरेते चत्वार आदेशा वा स्युः। चयइ। तरइ। तीरइ। पारइ। पक्षे —

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

■ शक्नोति को चय, तर, तीर, पार — ये चार आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ चयइ, तरइ, तीरइ, पारइ (शक्नोति — समर्थ होता है)

शक् + तिप्

'शकेश्चय-तर-तीर-पारा:' (713) से शक् धातु को विकल्प से चय् आदि आदेश

शेष पूर्ववत्

714. शकादीनां द्वित्वम् 4/230

शकादीनामन्त्यस्य द्वित्वं स्यात्। सक्कइ।

■ शक् आदि के अंतिम व्यंजन को द्वित्व होता है।

⊙ सक्कइ (शक्नोति)

शक् + तिप्

'शकादीनां द्वित्वम्' (714) से क् को द्वित्व

'शषो: स:' (16) से श् को स्

शेष पूर्ववत्

715. फक्कस्थक्क: 4/87

फक्कते: थक्क: इत्यादेश: स्यात्। थक्कइ।

■ फक्कति को थक्क आदेश होता है।

⊙ थक्कइ (फक्कति — नीचे जाता है)

फक्क् + तिप्

'फक्कस्थक्क:' (715) से फक्क् को थक्क् आदेश

शेष पूर्ववत्

716. श्लाघ: सलह: 4/88

श्लाघते: सलह इत्यादेश: स्यात्। सलहइ।

■ श्लाघते को सलह आदेश होता है।

⊙ सलहइ (श्लाघते — प्रशंसा करता है)

श्लाघ् + तिप्

'श्लाघ: सलह:' (716) से श्लाघ् को सलह् आदेश

शेष पूर्ववत्

717. खचेर्वेअड: 4/89

खचतेर्वेअड इत्यादेशो वा स्यात्। वेअडइ। खचइ।

■ खचति को वेअड आदेश विकल्प से होता है।

⊙ वेअडइ, खचइ (खचति — जड़ता है)

खच् + तिप्

'खचेर्वेअड:' (717) से खच् को विकल्प से वेअड् आदेश

शेष पूर्ववत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

पक्ष में — खचइ

718. पचेः सोल्ल-पउल्लौ 4/90

पचतेरेतावादेशौ वा स्तः। सोल्लइ, पउल्लइ। पयइ।

■ पचति को सोल्ल और पउल्ल आदेव विकल्प से होते हैं।

सोल्लइ, पउल्लइ, पयइ (पचति — पकाता है)

पच् + तिप्

'पचेः सोल्ल-पउल्लौ' (718) से पच् को विकल्प से सोल्ल्, पउल्ल् आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — पयइ ('क-ग-च ...' (17) से च् का लुक् तथा 'अवर्णो.....' (19) से य-श्रुति)

719. मुचेश्छड्डावहेड-मेल्लोस्सिक्क-रेअव णिल्लु×छ-धंसाडाः 4/91

मुञ्चतेरेते सप्तादेशा वा स्युः। छड्डइ, अवहेडइ, मेल्लइ, उस्सिक्कइ, रेअवइ, णिल्लुञ्छइ, धंसाडइ। पक्षे — मुअइ।

■ मु×चति को छड्ड, अवहेड आदि सात आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ छड्डइ, अवहेडइ, मेल्लइ, उस्सिक्कइ, रेअवइ, णिल्लु×छइ, धंसाडइ, मुअइ (मु×चति — मुक्त होता है)

मुच् + तिप्

'मुचेश्छड्डावहेड....' (719) से मुच् को विकल्प से छड्ड्, अवहेड् आदि आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — मुअइ

720. दुःखे णिव्वलः 4/92

दुःखविषयस्य मुचेर्णिव्वल इत्यादेशो वा स्यात्। णिव्वलइ।

■ दुःख विषयक मुच् को णिव्वल आदेश विकल्प से होता है।

⊙ णिव्वलेइ (दुःखं मुञ्चति — दुःख से मुक्त होता है)

मुच् + तिप्

'दुःखे णिव्वलः' (720) से दुःख विषयक मुच् को विकल्प से णिव्वल् आदेश

'व्यंजनादन्ते' (638) से धातु के अंत में अ

'वर्तमाना...' (640) से अ को ए

शेष पूर्ववत्

721. व×चे-वेंहव-वेलव-जूरव-उमच्छाः 4/93

व×चतेरेते चत्वार आदेशा वा स्युः। वेहवइ, वेलवइ, जूरवइ। उमच्छइ।

■ व×चति को वेहव, वेलव आदि चार आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ वेहवइ, वेलवइ, जूरवइ, उमच्छइ (व×चति — ठगता है)

व×च् + तिप्

'व×चे-वेंहव....' (721) से वञ्च् को विकल्प से वेहव् आदि आदेश

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शेष पूर्ववत्

722. रचेः उग्गह-अवह-विडविड्डाः 4/94

रचेरेते त्रय आदेशा वा स्युः। उग्गहइ, अवहइ, विडविड्डइ।

■ रच् को उग्गह, अवह, विडविड्ड — ये तीन आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ उग्गहइ, अवहइ, विडविड्डइ (रचयति — रचना करता है)

रच् + तिप्

'रचेः उग्गह...' (722) से रच् को विकल्प से उग्गह् आदि आदेश

शेष पूर्ववत्

723. समारचेः उवहत्थ-सारव-समार-केलायाः 4/95

समारचेरेते चत्वार आदेशा वा स्युः। उवहत्थइ, सारवइ, समारइ, केलायइ। पक्षे — समारयइ।

■ समारच् को उवहत्थ, सारव, समार, केलाय — ये चार आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ उवहत्थइ, सारवइ, समारइ, केलायइ, समारयइ (समारचयति — अच्छी तरह से रचना करता है)

समारच् + तिप्

'समारचेः....' (723) से समारच् को विकल्प से उवहत्थ आदि आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — समारयइ

724. सिचेः सिञ्च-सिम्पौ 4/96

सि×चतेरेतावादेशौ वा स्तः। सि×चइ, सिम्पइ। पक्षे — सेअइ।

■ सि×चति को सि×च और सिम्प आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ सि×चइ, सिम्पइ, सेअइ (सि×चति — सिंचन करता है)

सिच् + तिप्

'सिचेः सि×च-सिम्पौ' (724) से सिच् को विकल्प से सि×च्, सिम्प् आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — 'युवर्णस्य गुणः' (663) से इ को गुण

'क-ग-च-....' (17) से च् का लोप करने पर सेअइ बनेगा।

725. प्रच्छः पुच्छः 4/97

पृच्छेः पुच्छादेशः स्यात्। पुच्छइ।

■ प्रच्छ् को पुच्छ आदेश होता है।

⊙ पुच्छइ (पृच्छति — पूछता है)

प्रच्छ् + तिप्

'प्रच्छः पुच्छः' (725) से प्रच्छ् को पुच्छ् आदेश

शेष पूर्ववत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

726. गर्जेर्बुक्कः 4/98

गर्जतेर्बुक्क इत्यादेशो वा स्यात्। बुक्कइ। पक्षे — गज्जइ।

■ गर्जति को बुक्क आदेश विकल्प से होता है।

⊙ बुक्कइ, गज्जइ (गर्जति — गर्जना करता है)

गर्ज् + तिप्

'गर्जेर्बुक्कः' (726) से विकल्प से गर्ज् को बुक्क् आदेश

गज्जइ ('सर्वत्र.....' (9) से र् का लोप तथा 'अनादौ.....' (6) से ज् को द्वित्व)

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — गज्जइ ('सर्वत्र.....' (9) से र् का लोप तथा

'अनादौ...' (6) से ज् को द्वित्व

727. वृषे ढिक्कः 4/99

वृषककर्तृकस्य गर्जेर्ढिक्क इत्यादेशो वा स्यात्। ढिक्कइ।

■ वृषककर्तृक गर्ज को ढिक्क आदेश विकल्प से होता है।

⊙ ढिक्कइ (वृषभो गर्जति — बैल गर्जना करता है)

गर्ज् + तिप्

'वृषे ढिक्कः' (727) से वृषकर्तृक गर्ज् को विकल्प से ढिक्क् आदेश

शेष पूर्ववत्

728. राजेरग्घ-छज्ज-सह-रीर-रेहाः 4/100

राजेरेते पञ्चादेशा वा स्युः। अग्घइ, छज्जइ, सहइ, रीरइ, रेहइ। पक्षे — रायइ।

■ राजि को अग्घ, छज्ज, सह, रीर, रेह — ये पांच आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ अग्घइ, छज्जइ, सहइ, रीरइ, रेहइ, रायइ (राजते — चमकता है)

राज् + तिप्

'राजेरग्घ छज्ज-सह-रीर-रेहाः' (728) से विकल्प से राज् को अग्घ्, छज्ज् आदि आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — 'क-ग-च.....' (17) से ज् का लोप तथा

'अवर्णो य-श्रुतिः (19) से य-श्रुति करने पर रायइ बनेगा।

729. मस्जेराउड्ड-णिउड्ड-बुड्ड-खुप्पाः 4/101

मज्जतेरेते चत्वार आदेशा वा स्युः। आउड्डइ, णिउड्डइ, बुड्डइ, खुप्पइ। पक्षे — मज्जइ।

■ मज्जति को आउड्ड, णिउड्ड, बुड्ड, खुप्प — ये चार आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ आउड्डइ, णिउड्डइ, बुड्डइ, खुप्पइ, मज्जइ (मज्जति — मज्जन करता है, डूबता है)

मस्ज् + तिप्

'मस्जेराउड्ड-णिउड्ड-बुड्ड-खुप्पाः' (729) से विकल्प से मस्ज् को आउड्ड् आदि आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — 'क-ग-ट.....' (13) से स् का लोप तथा

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

'अनादौ....' (6) से ज् को द्वित्व करने पर मज्जइ बनेगा।

730. पु×जेरारोल-वमालौ 4/102

पु×जेरेतावादेशौ वा स्तः। आरोलइ, वमालइ। पक्षे — पु×जइ।

■ पुि×ज को आरोल और वमाल आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ आरोलइ, वमालइ, पु×जइ (पु×जयति — एकत्र करता है)

पु×ज् + तिप्

'पु×जेरारोल-वमालौ' (730) से विकल्प से पु×ज् को आरोल, वमाल् आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — पु×जइ।

731. लस्जेर्जीहः 4/103

लज्जतेर्जीह इत्यादेशो वा स्यात्। जीहइ, लज्जइ।

■ लज्जति को जीह आदेश विकल्प से होता है।

⊙ जीहइ, लज्जइ (लज्जति — शरमाता है)

लस्ज् + तिप्

'लस्जेर्जीह' (731) से विकल्प से लस्ज् को जीह् आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — 'क-ग-ट....' (13) से स् का लोप तथा

'अनादौ.....' (6) से ज् को द्वित्व करने पर लज्जइ बनेगा।

732. तिजेरोसुक्कः 4/104

तिजेः ओसुक्क इत्यादेशो वा स्यात्। ओसुक्कइ, तेअइ।

■ तिजि को ओसुक्क आदेश विकल्प से होता है।

⊙ ओसुक्कइ, तेअइ (तेजयति तिजति वा — तीक्ष्ण करता है)

तिज् + तिप्

'तिजेरोसुक्कः' (732) से विकल्प से तिज् को ओसुक्क् आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — 'युवर्णस्य गुणः' (663) से इ को गुण (ए) तथा

'क-ग-च.....' (17) से ज् का लोप करने पर तेअइ बनेगा।

733. मृजेरुग्घुस-लु×छ-पुंछ-पुंस-फुस-पुस-लुह-हुल-रोसाणाः 4/105

मृजेरेते नवादेशा वा स्युः। उग्घुसइ, लु×छइ, पु×छइ, पुंसइ, फुसइ, लुहइ, हुलइ, रोसाणइ। पक्षे— मज्जइ।

■ मृज् को उग्घुस, लु×छ आदि नव आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ उग्घुसइ, लु×छइ, पु×छइ, पुंसइ, फुसइ, लुहइ, हुलइ, रोसाणइ, मज्जइ (मार्ष्टि — साफ करता है)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

मृज् + तिप्

'मृजेरुग्घुस-लुञ्छ.....' (733) से विकल्प से मृज् को उग्घुस् आदि नव आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — 'ऋतोत्' (35) से ऋ को अ तथा

'शकादीनां द्वित्वम्' (714) से ज् को द्वित्व करने पर मज्जइ बनेगा।

734. भ×जेर्वेमय-मुसुमूर-मूर-सूर-सूड-विर-ifoj×t-dj×t-uhj×tk: 4/106

Hk×tsjsrs नवादेशा वा स्युः। वेमयइ, मुसुमूरइ, मूरइ, सूरइ, सूडइ, विरइ, पविर×जइ, कर×जइ, नीर×जइ। पक्षे — भज्जइ।

■ Hkf×t को वेमय, मुसुमूर, मूर, सूर, सूड, विर, ifoj×ज, करज, uhj×ज — ये नव आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ वेमयइ, मुसुमूरइ, मूरइ, सूरइ, सूडइ, विरइ, ifoj×जइ, कर×जइ, uhj×tb, भज्जइ (भनक्ति — तोड़ता है, फोड़ता है)

भ×ज् + तिप्

'भ×जेर्वेमय-मुसुमूर-मूर....' (734) से विकल्प से भ×ज् को वेमय् आदि नव आदेश

शेष पूर्ववत्

735. अनुव्रजेः पडिअग्गः 4/107

अनुव्रजेः पडिअग्ग इत्यादेशो वा स्यात्। पडिअग्गइ। पक्षे —

■ अनुव्रजति को पडिअग्ग आदेश विकल्प से होता है।

⊙ पडिअग्गइ (अनुव्रजति — अनुसरण करता है, पीछे जाता है)

अनुव्रज् + तिप्

'अनुव्रजेः पडिअग्गः' (735) से विकल्प से अनुव्रज् को पडिअग्ग् आदेश

शेष पूर्ववत्

736. व्रज-नृत-मदां च्चः 4/225

एषामन्त्यस्य च्चः स्यात्। अणुवच्चइ। नच्चइ, मच्चइ।

■ व्रज्, नृत्, मद् के अंतिम को च्च होता है।

⊙ अणुवच्चइ (अनुव्रजति — पीछे-पीछे जाता है)

⊙ नच्चइ (नृत्यति — नृत्य करता है)

⊙ मच्चइ (मन्दते — गर्व करता है)

इन रूपों में —

अनुव्रज् + तिप्, नृत् + तिप्, मद् + तिप्

'व्रज-नृत-मदां-च्चः' (736) से अंतिम (ज्, त्, द्) को च्च्

शेष पूर्ववत्

इसके अलावा अणुवच्चइ में 'नो णः' (28) से न् को ण् तथा

'सर्वत्र.....' (9) से र् का लोप हुआ है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

नच्चइ में 'ऋतोत्' (35) से ऋ को अ हुआ है।

737. अजेर्विढवः 4/108

अर्जेर्विढव इत्यादेशो वा स्यात्। विढवइ, अज्जइ।

■ अर्जयति को विढव आदेश विकल्प से होता है।

⊙ विढवइ, अज्जइ (अर्जयति — अर्जन करता है)

अर्ज् + तिप्

'अजेर्विढवः' (737) से विकल्प से अर्ज् को विढव् आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — 'सर्वत्र.....' (9) से र् का लोप तथा

'अनादौ.....' (6) से ज् को द्वित्व करने पर अज्जइ बनेगा।

738. युजो जु×ज-जुज्ज-जुप्पाः 4/109

युजेरेते त्रय आदेशाः स्युः। जु×जइ, जुज्जइ, जुप्पइ।

■ युजि को जु×ज, जुज्ज, जुप्प — ये तीन आदेश होते हैं।

⊙ जु×जइ, जुज्जइ, जुप्पइ (युनक्ति — जोड़ता है)

युज् + तिप्

'युजो जुञ्ज-जुज्ज-जुप्पाः' (738) से युज् को जुञ्ज्, जुज्ज्, जुप्प् आदेश

शेष पूर्ववत्

739. भुजो भु×ज-जिम-जेम-कम्म-अण्ह-चमढ-समाण-चड्डाः 4/110

भुजेरेतेष्टादेशाः स्युः। भुञ्जइ, जिमइ, जेमइ, कम्मेइ, अण्हइ, चमढइ, समाणइ, चड्डइ।

■ भुज् को भq×t, जिम, जेम, कम्म, अण्ह, चमढ, समाण, चड्ड — ये आठ आदेश होते हैं।

⊙ भुञ्जइ, जिमइ, जेमइ, कम्मेइ, अण्हइ, चमढइ, समाणइ, चड्डइ (भुङ्क्ते — भोजन करता है)

भुज् + तिप्

'भुजो भु×ज-जिम-जेम-कम्म.....' (739) से भुज् को भु×ज्, जिम् आदि आठ आदेश

शेष पूर्ववत्

740. वोपेन कम्मवः 4/111

उपेन युक्तस्य भुजेः कम्मव इत्यादेशो वा स्यात्। कम्मवइ। पक्षे — उवहुज्जइ।

■ उप उपसर्ग युक्त भुज् धातु को कम्मव आदेश विकल्प से होता है।

⊙ कम्मवइ, उवहुज्जइ (उपभुङ्क्ते — उपभोग करता है)

उपभुज् + तिप्

'वोपेन कम्मवः' (740) से विकल्प से उपभुज् को कम्मव् आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — उवहुज्जइ।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

741. घटेर्गढः 4/112

घटतेर्गढ इत्यादेशो वा स्यात्। गढइ। पक्षे — घडइ।

■ घटति को गढ आदेश विकल्प से होता है।

⊙ गढइ, घडइ (घटते — चेष्टा करता है, बनाता है)

घट् + तिप्

'घटेर्गढः' (741) से विकल्प से घट् को गढ् आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — घडइ ('टो डः' (22) से ट् को ड्)

742. समो गलः 4/113

संपूर्वस्य घटतेर्गल इत्यादेशो वा स्यात्। संगलइ। पक्षे — संघडइ।

■ सम् उपसर्ग पूर्वक घटति को गल आदेश विकल्प से होता है।

⊙ संगलइ, संघडइ (संघटते — प्रयत्न करता है, सम्बद्ध होता है)

संघट् + ते

'समो गलः' (742) से घट् को विकल्प से गल् आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — संघडइ।

743. हासेन स्फुटेर्मुरः 4/114

हासकरणस्य स्फुटेर्मुरादेशो वा स्यात्। मुरइ।

■ हासकरणक स्फुटि धातु को मुर आदेश विकल्प से होता है।

⊙ मुरइ (हासेन स्फुटति — हास्य के कारण खिलता है)

स्फुट् + तिप्

'हासेन स्फुटेर्मुरः' (743) से विकल्प से स्फुटि को मुर् आदेश

शेष पूर्ववत्

744. मण्डेश्चि×च-चि×चअ-चि×चल्ल-रीड-टिविडिक्काः 4/115

मण्डेरेते प×चादेशा वा स्युः। चि×चइ, चि×चअइ, चि×चल्लइ, रीडइ, टिविडिक्कइ। पक्षे — मण्डइ।

■ मण्डि को चि×च, चि×चअ, चि×चल्ल, रीड, टिविडिक्क — ये पांच आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ चि×चइ, चि×चअइ, चि×चल्लइ, रीडइ, टिविडिक्कइ, भण्डइ (मण्डयति — भूषित करता है, सजाता है)

मड् + तिप्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

'मण्डेश्चि×च-चि×चअ.....' (744) से विकल्प से मडि को चि×च् आदि आदेश
शेष पूर्ववत्
पक्ष में — मण्डइ (संस्कृतवत्)

745. तुडेस्तोड-तुट्ट-खुट्ट-खुडोक्खुडोल्लुक्क-णिलुक्क-लुक्कोल्लूराः 4/116

तुडेरेते नवादेशा वा स्युः। तोडइ, तुट्टइ, खुट्टइ, खुडइ, उक्खुडइ, उल्लुक्कइ, णिलुक्कइ, लुक्कइ, उल्लूरइ। पक्षे — तुडइ।

■ तुड् को तोड, तुट्ट, खुट्ट, खुड, उक्खुड, उल्लुक्क, णिलुक्क, लुक्क, उल्लूर — ये नव आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ तोडइ, तुट्टइ, खुट्टइ, खुडइ, उक्खुडइ, उल्लुक्कइ, णिलुक्कइ, लुक्कइ, उल्लूरइ, तुडइ (तुडति — तोड़ता है, टुकडा करता है)
तुड् + तिप्
'तुडेस्तोड-तुट्ट-खुट्ट....' (745) से विकल्प से तुड् को तोड्, तुट्ट आदि आदेश ष पूर्ववत्
पक्षे में — तुडइ।

746. घूर्णो घुल-घोल-घुम्म-पहल्लाः 4/117

घूर्णेरेते चत्वार आदेशाः स्युः। घुलइ, घोलइ, घुम्मइ, पहल्लइ।

■ घूर्ण को घुल, घोल, घुम्म, पहल्ल — ये चार आदेश होते हैं।

⊙ घुलइ, घोलइ, घुम्मइ, पहल्लइ (घूर्णति — घूमता है)
घूर्ण् + तिप्
'घूर्णो घुल-घोल-घुम्म-पहल्लाः' (746) से धूर्ण् को घुल् आदि आदेश
शेष पूर्ववत्

747. विवृतेर्ढसः 4/118

विवृतेर्ढस इत्यादेशो वा स्यात्। ढंसइ। पक्षे — विवट्टइ।

■ विवृत् को ढंस आदेश विकल्प से होता है।

⊙ ढंसइ, विवट्टइ (विवर्तते — गिरता है)
विवृत् + तिप्
'विवृतेर्ढँसः' (747) से विकल्प से विवृत् को ढंस् आदेश
शेष पूर्ववत्
पक्ष में — विवर्त् (संस्कृतवत्) + इ
'र्तस्याधूर्तादौ' (328) से र्त् को ट्
'अनादौ...' (6) से ट् को द्वित्व करने पर
'व्य×जनाददन्ते' (638) से धातु के अंत में अ करने पर विवट्टइ बनेगा।

748. क्वथेरट्टः 4/119

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

क्वथेरट्ट इत्यादेशो वा स्यात्। अट्टइ — पक्षे

■ क्वथि को अट्ट आदेश विकल्प से होता है।

⊙ अट्टइ (क्वथ्यते — क्वाथ करता है)

क्वथ् + तिप्

'क्वथेरट्टः' (748) से विकल्प से क्वथ् को अट्ट् आदेश

शेष पूर्ववत्

749. क्वथ-वर्धां ढः 4/220

अनयोरन्त्यस्य ढः स्यात्। कढइ, वड्ढइ।

■ क्वथ् और वर्ध के अन्त्य को ढ होता है।

⊙ कढइ (क्वथति — क्वाथ करता है)

क्वथ् + तिप्

'सर्वत्र.....' (9) से व् का लोप

'क्वथ-वर्धां ढः.....' (749) से थ् को ढ्

शेष पूर्ववत्

⊙ वड्ढइ (वर्धते — बढ़ता है)

वृध् + ते

'ऋतोत्' (35) से ऋ को अ

'क्वथ-वर्धां ढः' (749) से ध् को ढ्

'अनादौ...' (6) से ढ् को द्वित्व

'द्वितीय....' (14) से पूर्व ढ् को ड्

शेष पूर्ववत्

750. ग्रन्थो गण्ठः 4/120

ग्रन्थो गण्ठ इत्यादेशः स्यात्। गण्ठइ।

■ ग्रन्थ को गण्ठ आदेश होता है।

⊙ गण्ठइ (ग्रथ्नाति — गूंथता है, बनाता है)

ग्रन्थ् + तिप्

'ग्रन्थो गण्ठः' (750) से ग्रन्थ् को गण्ठ् आदेश

शेष पूर्ववत्

751. मन्थेर्घुसल-विरोलौ 4/121

मन्थेरेतावादेशौ वा स्तः। घुसलइ, विरोलइ। पक्षे — मन्थइ।

■ मन्थि को घुसल और विरोल आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ घुसलइ, विरोलइ, मन्थइ (मथ्नाति — मथता है)

मन्थ् (संस्कृतवत्) + तिप्

'मन्थेर्घुसल-विरोलौ' (751) से विकल्प से मन्थ् को घुसल्, विरोल् आदेश

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शेष पूर्ववत्

पक्षे में — मन्थइ।

752. ह्लादेरवअच्छः 4/122

ञिन्नन्ताञिन्नन्तस्य ह्लादतेः अवअच्छ इत्यादेशः स्यात्। अवअच्छइ।

■ ञिन्नन्त और अञिन्नन्त (जिस धातु के अंत में ञि नहीं है) ह्लाद् को अवअच्छ आदेश होता है।

⊙ अवअच्छइ (ह्लादते ह्लादयति वा — खुश होता है)

ह्लाद् + तिप्

'ह्लादेरवअच्छः' (752) से ह्लाद् को अवअच्छ् आदेश

शेष पूर्ववत्

753. नेः सदो मज्जः 4/123

निपूर्वस्य सदो मज्ज इत्यादेशः स्यात्। णुमज्जइ।

■ नि उपसर्ग पूर्वक षद् (सद्) को मज्ज आदेश होता है।

⊙ णुमज्जइ (निषीदति — बैठता है)

निसद् + तिप्

'नेः सदो मज्जः' (753) से सद् को मज्ज् आदेश

शेष पूर्ववत्

754. छिदेर्दुहाव-णिच्छल्ल-णिज्झोड-णिव्वर-णिल्लूर-लूराः 4/124

छिदेरेते षडादेशा वा स्युः। दुहावइ, णिच्छल्लइ, णिज्झोडइ, णिव्वरइ, णिल्लूरइ, लूरइ। पक्षे —

■ छिदि को दुहाव, णिच्छल्ल, णिज्झोड, णिव्वर, णिल्लूर, लूर — ये छः आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ दुहावइ, णिच्छल्लइ, णिज्झोडइ, णिव्वरइ, णिल्लूरइ, लूरइ (छिनत्ति — छेदन करता है)

छिद् + तिप्

'छिदेर्दुहाव-णिच्छल्ल...' (754) से विकल्प से छिद् को दुहाव् आदि आदेश

शेष पूर्ववत्

755. छिदि-भिदो न्दः 4/216

अनयोरन्त्यस्य न्दः स्यात्। छिन्दइ, भिन्दइ।

■ छिद् और भिद् के अन्त्य को न्द होता है।

⊙ छिन्दइ (छिनत्ति — छेदन करता है)

⊙ भिन्दइ (भिनत्ति — भेदन करता है)

छिद् + तिप्, भिद् + तिप्

'छिदि-भिदो न्दः' (755) से अन्त्य (द्) को न्द्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शेष पूर्ववत्

756. आङा ओअन्दोद्दालौ 4/125

आङा युक्तस्य छिदेरेतावादेशौ वा स्तः। ओअन्दइ, उद्दालइ। पक्षे — अच्छिन्दइ।

■ आङ् उपसर्ग युक्त छिद् को ओअन्द और उद्दाल आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ ओअन्दइ, उद्दालइ, अच्छिन्दइ (आच्छिनत्ति — हाथ से छीन लेता है)

आछिद् + तिप्

'आङा ओअन्दोद्दालौ' (756) से विकल्प से आछिद् को ओअन्द्, उद्दाल् आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — आच्छिन्द् (संस्कृतवत्) + तिप्

'ह्रस्वः संयोगे' (12) से आ को ह्रस्व (अ)

शेष पूर्ववत् करने पर अच्छिन्दइ बनेगा।

757. मृदो मल-मढ-परिहट्ट-खड्ड-चड्ड-मड्ड-पन्नाडाः 4/126

मृद्नातेरेते सप्तादेशाः स्युः। मलइ, मढइ, परिहट्टइ, खड्डइ, चड्डइ, मड्डइ, पन्नाडइ।

■ मृद्नाति को मल, मढ, परिहट्ट, खड्ड, चड्ड, मड्ड, पन्नाड — ये सात आदेश होते हैं।

⊙ मलइ, मढइ, परिहट्टइ, खड्डइ, चड्डइ, मड्डइ, पन्नाडइ (मृद्नाति — मर्दन करता है)

मृद् + तिप्

'मृदो मल-मढ-परिहट्ट-खड्ड-चड्ड-मड्ड-पन्नाडाः' (757) से मृद् को मल्, मढ्, आदि आदेश

शेष पूर्ववत्

758. स्पन्देश्चुलुचुलः 4/127

स्पन्देः चुलुचुल इत्यादेशो वा स्यात्। चुलुचुलइ। पक्षे — फन्दइ।

■ स्पन्दि को चुलुचुल आदेश विकल्प से होता है।

⊙ चुलचुलइ, फन्दइ (स्पन्दति — फड़कता है)

स्पन्द् + तिप्

'स्पन्देश्चुलुचुलः' (758) से विकल्प से स्पन्द् को चुलुचुल् आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — 'ष्प-स्पयोः फः' (32) से स्प् को फ् करने पर फन्दइ बनेगा।

759. निरः पदेर्वलः 4/128

निः पूर्वस्य पदेर्वल इत्यादेशो वा स्यात्। निव्वलइ। पक्षे — निप्पज्जइ।

■ निर्पूर्वक पदि को वल आदेश विकल्प से होता है।

⊙ निव्वलइ, निप्पज्जइ (निष्पद्यते — निष्पन्न होता है)

निष्पद् + तिप्

'क-ग-ट-ड.....' (13) से ष् का लोप

'निरः पदेर्वलः' (759) से पद् को विकल्प से वल् आदेश

'अनादौ.....' (से व् को द्वित्व

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — निप्पज्जइ (देखें सू. 760)

760. स्विदां ज्जः 4/224

स्विदि प्रकाराणामन्त्यस्य ज्जः स्यात्। निप्पज्जइ।

■ स्विद् प्रकार की धातुओं के अन्त्य को ज्ज होता है।

⊙ निप्पज्जइ (निष्पद्यते — निष्पन्न होता है)

निष्पद् + तिप्

'क-ग-ट-ड.....' (13)से ष् का लोप

'अनादौ.....' (6) से प् को द्वित्व

'स्विदां ज्जः' (760) से द् को ज्ज्

शेष पूर्ववत्

761. विसंवदेर्विअट्ट-विलोट्ट-फंसा 4/129

विसंपूर्वस्य वदेरेते त्रय आदेशा वा स्युः। विअट्टइ, विलोट्टइ, फंसइ। पक्षे — विसंवयइ।

■ वि और सम् उपसर्ग पूर्वक वद् को विअट्ट, विलोट्ट, फंस — ये तीन आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ विअट्टइ, विलोट्टइ, फसंइ, विसंवयइ (विसंवदति — अप्रमाणित करता है)

विसंवद् + तिप्

'विसंवदेर्विअट्ट-विलोट्ट-फंसा' (761) से विकल्प से विसंवद् को विअट्ट्, विलोट्ट्, फंस् आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — 'क-ग-च....' (17) से द् का लोप तथा 'अवर्णो य-श्रुतिः' (19) से य-श्रुति करने पर विसंवयइ बनेगा।

762. शदो झड-पक्खोडौ 4/130

शीयतेरेतावादेशौ स्तः। झडइ, पक्खोडइ।

■ शद् को झड और पक्खोड आदेश होते हैं।

⊙ झडइ, पक्खोडइ (शीयते — झाड़कर गिराता है)

शद् + तिप्

'शदो झड-पक्खोडौ' (762) से शद् को झड्, पक्खोड् आदेश

शेष पूर्ववत्

763. आक्रन्देर्णीहरः 4/131

आक्रन्देर्णीहर इत्यादेशो वा स्यात्। णीहरइ, अक्कन्दइ।

■ आक्रन्दति को णीहर आदेश विकल्प से होता है।

⊙ णीहरइ, अक्कन्दइ (आक्रन्दति — चिल्लाता है)

आक्रन्द् + तिप्

'आक्रन्देर्णीहरः' (763) से विकल्प से आक्रन्द् को णीहर् आदेश

शेष पूर्ववत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

पक्ष में — 'सर्वत्र....' (9) से र् का लोप
'अनादौ....' (6) से क् को द्वित्व
'ह्रस्वः संयोगे' (12) से आ को ह्रस्व
शेष प्रक्रिया पूर्ववत् करने पर अक्कन्दइ बनेगा।

764. खिदेर्जूर-विसूरौ 4/132

खिदेरेतावादेशौ वा स्तः। जूरइ, विसूरइ। पक्षे — खिज्जइ।

■ खिदि को जूर और विसूर आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ जूरइ, विसूरइ, खिज्जइ (खिद्यते — अफसोस करता है)
खिद् + तिप्
'खिदेर्जूर-विसूरौ' (764) से विकल्प से खिद् को जूर् और विसूर् आदेश
शेष पूर्ववत्
पक्ष में — 'स्विदां। ज्जः' (760) से द् को ज्ज् करने पर खिज्जइ बनेगा।

765. रुधेरुत्थंघः 4/133

रुधेः उत्थंघ इत्यादेशो वा स्यात्। उत्थंघइ। पक्षे —

■ रुध् को उत्थंघ आदेश विकल्प से होता है।

⊙ उत्थंघइ (रुणद्धि — रोकता है)
रुध् + तिप्
'रुधेरुत्थंघः' (765) से रुध् को विकल्प से उत्थंघ आदेश
शेष पूर्ववत्

766. रुधो न्ध-म्भौ च 4/218

रुधोन्त्यस्य न्ध, म्भ इत्येतौ चात् ज्झश्च स्यात्। रुन्धइ, रुम्भइ, रुज्झइ।

■ रुध् के अन्त्य को न्ध, म्भ तथा च से ज्झ होता है।

⊙ रुन्धइ, रुम्भइ, रुज्झइ (रुणद्धि)
रुध् + तिप्
'रुधो न्ध-म्भौ च' (766) से ध् को क्रमशः न्घ्, म्भ् और ज्झ्
शेष पूर्ववत्

767. निषेधेर्हक्कः 4/134

निषेधतेर्हक्क इत्यादेशो वा स्यात्। हक्कइ, निसेहइ।

■ निषेधति को हक्क आदेश विकल्प से होता है।

⊙ हक्कइ, निसेहइ (निषेधति — निषेध करता है)
निषिध् + तिप्
'निषेधेर्हक्कः' (767) से विकल्प से निषिध् को हक्क् आदेश
शेष पूर्ववत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

पक्ष में — ' श-षो-सः' (16) से ष् को स्
'ख-घ-थ-ध-भाम्' (30) से ध् को ह्
'युवर्णस्य गुणः' (663) से इ को गुण (ए) करने पर निसेहइ बनेगा।

768. क्रुधेर्जूरः 4/135

क्रुधेर्जूर इत्यादेशो वा स्यात्। जूरह। पक्षे —

■ क्रुध् को जूर आदेश विकल्प से होता है।

⊙ जूरइ (क्रुध्यति — गुस्सा करता है)

क्रुध् + तिप्

'क्रुधेर्जूरः' (768) से विकल्प से क्रुध् को जूर् आदेश

शेष पूर्ववत्

769. युध-बुध-गृध-क्रुध-सिध-मुहां ज्झः 4/217

एषामन्त्यस्य ज्झः स्यात्। कुज्झइ। जुज्झइ, बुज्झइ, गिज्झइ, सिज्झइ, मुज्झइ।

■ युध्, बुध्, गृध्, क्रुध्, सिध् और मुह् के अंतिम को ज्झ होता है।

⊙ कुज्झइ (क्रुध्यति — गुस्सा करता है)

⊙ जुज्झइ (युध्यते — लड़ाई करता है)

⊙ बुज्झइ (बुध्यते — जानता है, जागता है)

⊙ गिज्झइ (गृध्यति — आसक्त होता है)

⊙ सिज्झइ (सिध्यति — निष्पन्न होता है)

⊙ मुज्झइ (मुह्यति — मोह करता है)

इन धातु रूपों में —

'युध-बुध-गृध-क्रुध-सिध-मुहां ज्झः' (769) से धातु के अंतिम को ज्झ्

शेष पूर्ववत्

इसके अलावा कुज्झइ में 'सर्वत्र....' (9) से र् का लोप

जुज्झइ में 'आदेर्यो जः' (73) से य् को ज् तथा

गिज्झइ में 'इत्कृपादौ' (21) से ऋ को इ हुआ है।

770. जनो जा-मम्मौ 4/136

जायतेर्जा-जम्मौ स्तः। जाअइ, जम्मइ।

■ जायते को जा और जम्म आदेश होते हैं।

⊙ जाअइ, जम्मइ (जायते — उत्पन्न होता है)

जन् + ते

'जनो जा-जम्मौ' (770) से जन् को जा और जम्म्

शेष पूर्ववत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

इसके अलावा जाअइ में 'स्वरादनतो वा' (619) से धातु के अंत में विकल्प से अ का आगम हुआ है।

771. तनेस्तड-तड्ड-तड्डव-विरल्लाः 4/137

तनेरेते चत्वार आदेशा वा स्युः। तडइ, तड्डइ, तड्डवइ, विरल्लइ। पक्षे — तणइ।

■ तन् को तड, तड्ड, तड्डव, विरल्ल — ये चार आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ तडइ, तड्डइ, तड्डवइ, विरल्लइ, तणइ (तनोति — विस्तार करता है)

तन् + तिप्

'तनेस्तड-तड्ड-तड्डव-विरल्लाः' (771) से विकल्प से तन् को तड् आदि आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — तणइ ('नो णः' (28) से न् को ण्)

772. तृपस्थिप्पः 4/138

तृप्यतेः थिप्प इत्यादेशः स्यात्। थिप्पइ।

■ तृप्यति को थिप्प आदेश होता है।

⊙ थिप्पइ (तृप्यति — तृप्त होता है)

तृप् + तिप्

'तृपस्थिप्पः' (772) से तृप् को थिप्प् आदेश

शेष पूर्ववत्

773. उपसर्पेरल्लिअः 4/139

उपपूर्वस्य सृपेः कृतगुणस्य अल्लिअ इत्यादेशो वा स्यात्। अल्लिअइ। पक्षे — उवसप्पइ।

■ उपपूर्वक गुण की हुई सृप् (सर्प्) धातु को अल्लिअ आदेश विकल्प से होता है।

⊙ अल्लिअइ, उवसप्पइ (उपसर्पति — समीप में जाता है)

उपसर्प् + तिप्

'उपसर्पेरल्लिअः' (773) से विकल्प से उपसर्प् को अल्लिअ आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — 'पो वः' (24) से प् को व्

'सर्वत्र....' (9) से र् का लोप

'अनादौ....' (6) से प् को द्वित्व

शेष पूर्ववत् करने पर उवसप्पइ बनेगा।

774. संतपेर्झंखः 4/140

संतपेर्झंख इत्यादेशो वा स्यात्। झंखइ। पक्षे — संतप्पइ।

■ संतप् को झंख आदेश विकल्प से होता है।

⊙ झंखइ, संतप्पइ (संतप्यते — संताप करता है)

संतप्य + तिप्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

'संतपेर्झंखः (774) से विकल्प से संतप् को झंख् आदेश
शेष पूर्ववत्
पक्ष में — 'अधो.....' (5) से य् का लोप तथा
'अनादौ....' (6) से प् को द्वित्व करने पर संतप्पइ बनेगा।

775. व्यापेरोअग्गः 4/141

व्याप्नोतेः ओअग्ग इत्यादेशो वा स्यात्। ओअग्गइ। पक्षे — वावेइ।

■ व्याप्नोति को ओअग्ग ओदश विकल्प से होता है।

⊙ ओअग्गइ, वावेइ (व्याप्नोति —— व्याप्त करता है)
व्याप् + तिप्
'व्यापेरोअग्गः' (775) से विकल्प से व्याप् को ओअग्ग् आदेश
शेष पूर्ववत्
पक्ष में — 'अधो मनयाम्' (5) से य् का लोप
'पो वः' (24) से प् को व् तथा
'वर्तमाना...' (640) से अ को ए करने पर वावेइ बनेगा।

776. समापेः समाणः 4/142

समाप्नोतेः समाण इत्यादेशो वा स्यात्। समाणइ। पक्षे — समावेइ।

■ समाप्नोति को समाण आदेश विकल्प से होता है।

⊙ समाणइ, समावेइ (समाप्नोति — समाप्त करता है)
समाप् + तिप्
'समापेः समाणः' (776) से समाप् को विकल्प से समाण् आदेश
शेष पूर्ववत्
पक्ष में — 'पो वः' (24) से प् को व् तथा
'वर्तमाना...' (640) से अ को ए करने पर समावेइ बनेगा।

777. क्षिपेर्गलत्थाड्डक्ख-सोल्ल-पेल्ल-णोल्ल-छुह-हुल-परी-घत्ताः 4/143

क्षिपेरेते नवादेशा वा स्युः। गलत्थइ, अड्डक्खइ, सोल्लइ, पेल्लइ, णोल्लइ, छुहइ, हुलइ, परीइ, घत्तइ। पक्षे — खिवइ।

■ क्षिप् को गलत्थ, अड्डक्ख आदि नव आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ गलत्थइ, अड्डक्खइ, सोल्लइ, पेल्लइ, णोल्लइ, छुहइ, हुलइ, परीइ, घत्तइ, खिवइ (क्षिपति — फेंकता है)
क्षिप् + तिप्
'क्षिपेर्गलत्थाड्डक्ख...' (777) से क्षिप् को विकल्प से गलत्थ्, अड्डक्ख् आदि आदेश
शेष पूर्ववत्
पक्ष में — 'क्षः खः....' (26) से क्ष् को ख्
'पो वः (24) से प् को व् करने पर खिवइ बनेगा।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

778. उत्थिपेर्गुलगुञ्छोत्थंघाल्लत्थोब्भुत्तोस्सिक्क-हक्खुवाः 4/144

उत्क्षिपेरेते षडादेशा वा स्युः। गुलगु×छइ, उत्थंघइ, अल्लत्थइ, उब्भुत्तइ, उस्सिक्कइ, हक्खुवइ। पक्षे — उक्खिवइ।

■ उत्क्षिप् को गुलगु×छ, उत्थंघ, अल्लत्थ, उब्भुत्त, उस्सिक्क, हक्खुव — ये छः आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ गुलगु×छइ, उत्थंघइ, अल्लत्थइ, उब्भुत्तइ, उस्सिक्कइ, हक्खुवइ, उक्खिवइ (उत्क्षिपति — ऊंचा फेंकता है)

उत्क्षिप् + तिप्

'उत्क्षिपेर्गुलगु×छोत्थं....' (778) से उत्क्षिप् को विकल्प से गुलगु×छ् आदि आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — 'क-ग-ट-ड.....' (13) से त् का लुक्

'अनादौ....' (6) से ख् को द्वित्व तथा

'द्वितीय.....' (14) से पूर्व ख् को क् करने पर उक्खिवइ बनेगा।

779. आक्षिपेर्णीरवः 4/145

आक्षिपेर्णीरव इत्यादेशो वा स्यात्। णीरवइ। पक्षे — अक्खिवइ।

■ आक्षिप् को णीरव आदेश विकल्प से होता है।

⊙ णीरवइ, अक्खिवइ (आक्षिपति — आक्षेप करता है)

आक्षिप् + तिप्

'आक्षिपेर्णीरवः' (779) से आक्षिप् को विकल्प से णीरव् आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — अक्खिवइ ('ह्रस्वः संयोगे' (12) से ह्रस्व)

780. स्वपेः कमवस-लिस-लोट्टाः 4/146

स्वपेरेते त्रय आदेशा वा स्युः। कमवसइ, लिसइ, लोट्टइ। पक्षे —

■ स्वपि को कमवस, लिस, लोट्ट — ये तीन आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ कमवसइ, लिसइ, लोट्टइ (स्वपिति — सोता है)

स्वप् + तिप्

'स्वपेः कमवस....' (780) से स्वप् को विकल्प से कमवस् आदि आदेश

शेष पूर्ववत्

781. स्वपावुच्च 1/64

स्वपितौ धातो आदेरस्य उत्, ओच्च स्यात्। सुवइ, सोवइ।

■ स्वप् धातु के आदि अ को उ, ओ होता है।

⊙ सुवइ, सोवइ (स्वपिति)

स्वप् + तिप्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

'सर्वत्र.....' (9) से व् का लोप

सप् + तिप्

'स्वपावुच्च' (781) से आदि अ को उ, ओ

'पो वः' (24) से प् को व्

शेष पूर्ववत्

782. वेपेरायम्बायज्झौ 1/147

वेपेरेतावादेशौ वा स्तः। आयम्बइ, आयज्झइ। पक्षे — वेवइ।

■ वेप् को आयम्ब और आयज्झ आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ आयम्बइ, आयज्झइ, वेवइ (वेपते — कांपता है)

वेप् + ते

'वेपेरायम्बायज्झौ' (782) से वेप् को विकल्प से आयम्ब्, आयज्झ् आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — वेवइ ('पो वः' (24) से प् को व्)

783. विलपेर्झंख-वडवडौ 1/148

विलपेरेतावादेशौ वा स्तः। झंखइ, वडवडइ। पक्षे — विलवइ।

■ विलप् को झंख, वडवड आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ झंखइ, वडवडइ, विलवइ (विलपति — विलाप करता है)

विलप् + तिप्

'विलपेर्झंख-वडवडौ' (783) से विलप् को विकल्प से झंख्, वडवड् आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — विलवइ।

784. लिपो लिम्पः 4/149

लिम्पतेर्लिम्प इत्यादेशः स्यात्। लिम्पइ।

■ लिम्पति को लिम्प आदेश होता है।

⊙ लिम्पइ (लिम्पति — लीपता है)

लिप् + तिप्

'लिपो लिम्पः' (784) से लिप् को लिम्प् आदेश

शेष पूर्ववत्

785. गुप्येर्विर-णडौ 4/150

गुप्यतेरेतावादेशौ वा स्तः। विरइ, णडइ। पक्षे — गुप्पइ।

■ गुप् को विर, णड आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ विरइ, णडइ, गुप्पइ (गुप्यति — व्याकुल होता है)

गुप् + तिप्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

'गुप्येर्विर-णडौ' (785) से गुप् को विकल्प से विर्, णड् आदेश
शेष पूर्ववत्
पक्ष में — गुप्य (संस्कृतवत्) + तिप्
'अधो मनयाम्' (5) से य् का लोप व
'अनादौ....' (6) से प् को द्वित्व करने पर गुप्पइ बनेगा।

786. प्रदीपेस्तेअव-सन्दुम-सन्धुक्क-अब्भुत्ताः 4/152

प्रदीप्यतेरेते चत्वार आदेशा वा स्युः। तेअवइ, सन्दुमइ, सन्धुक्कइ, अब्भुत्तइ। पक्षे — पलीवइ।

■ प्रदीपि को तेअव, सन्दुम आदि चार आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ तेअवइ, सन्दुमइ, सन्धुक्कइ, अब्भुत्तइ, पलीवइ (प्रदीप्यते — जलाता है)
प्रदीप् + ते
'प्रदीपेस्तेअव...' (786) से प्रदीप् को विकल्प से तेअव् आदि आदेश
शेष पूर्ववत्
पक्ष में — 'सर्वत्र....' (9) से र् का लोप
'प्रदीपि दोहदे लः' (69) से द् को ल्
'पो वः' (24) से प् को व् करने पर पलीवइ बनेगा।

787. लुभेः संभावः 4/153

लुभ्यतेः संभाव इत्यादेशो वा स्यात्। संभावइ। पक्षे — लुब्भइ।

■ लुभि को संभाव आदेश विकल्प से होता है।

⊙ संभावइ, लुब्भइ (लुभ्यति — लोभ करता है)
लुभ् + तिप्
'लुभेः संभावः' (787) से लुभ् को विकल्प से संभाव् आदेश
शेष पूर्ववत्
पक्ष में — लुभ्य + तिप्
'अधो.....' (5) से य् का लोप
'अनादौ.....' (6) से भ् को द्वित्व
'द्वितीय....द (14) से पूर्व भ् को ब् करने पर लुब्भइ बनेगा।

788. क्षुभेः खउर-पड्डुहौ 4/154

क्षुभेरेतावादेशौ वा स्तः। खउरइ, पड्डुहइ। पक्षे — खुब्भइ।

■ क्षुभ् को खउर, पड्डुह आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ खउरइ, पड्डुहइ, खुब्भइ (क्षुभ्यति — क्षुब्ध होता है)
क्षुभ् + तिप्
'क्षुभेः खउर-पड्डुहौ' (788) से क्षुभ् को विकल्प से खउर, पड्डुह् आदेश
शेष पूर्ववत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

पक्ष में — क्षुभ्य + तिप्

'क्षः खः...' (26) से क्ष् को ख् तथा शेष प्रक्रिया ऊपरवत् करने पर खुब्भइ बनेगा।

789. आङो रभे रम्भ-ढवौ 4/155

आङ्परस्य रभेरेतावादेशौ वा स्तः। आरम्भइ, आढवइ। पक्षे — आरभइ।

■ आङ् से परे रभ् को रम्भ और ढव आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ आरम्भइ, आढवइ, आरभइ (आरभते — आरम्भ करता है)

आरभ् + ते

'आङो रभे रम्भ-ढवौ' (789) से रभ् को विकल्प से रम्भ्, ढव् आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — आरभइ।

790. उपालम्भेर्झंख-पच्चार-वेलवाः 4/156

उपालम्भतेरेते त्रय आदेश वा स्युः। झंखइ, पच्चारइ, वेलवइ। पक्षे — उवालम्भइ।

■ उपालभि को झंख, पच्चार, वेलव — ये तीन आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ झंखइ, पच्चारइ, वेलवइ, उवालम्भइ (उपालम्भते — उपालम्भ देता है)

उपालभ् + ते

'उपालम्भेर्झंख...' (790) से उपालभ् को विकल्प से झंख् आदि आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — उपालम्भ (संस्कृतवत्) + ते

'पो वः' (24) से प् को व् करने पर उवालम्भइ बनेगा।

791. अवेर्जृम्भो जम्भा 4/157

जृम्भेर्जम्भा इत्यादेशः स्यात् वेस्तु न। जम्भाइ, जम्भाअइ। अवेरिति किम्? विअम्भइ।

■ वि उपसर्ग से रहित जृम्भि को जम्भ आदेश होता है।

⊙ जम्भाइ, जम्भाअइ (जृम्भते — जंभाई लेता है)

जृम्भ् + ते

'अवेर्जृम्भो जम्भा' (791) से जृम्भ् को विकल्प से जम्भा आदेश

शेष पूर्ववत्

जम्भाअइ में 'स्वरादनतो वा' (619) से धातु के अंत में विकल्प से अ का आगम हुआ है।

■ वि को छोड़कर ऐसा क्यों?

⊙ विअम्भइ (विजृम्भते — जंभाई खाता है, उत्पन्न होता है)

विजृम्भ् + ते

'ऋतोत्' (35) से ऋ को अ

'क-ग-च-ज....' (17) से ज् का लुक्

शेष पूर्ववत्

792. भाराक्रान्ते नमेर्णिसुढः 4/158

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

भाराक्रान्ते कर्तरि नमेर्णिसुढ इत्यादेशो वा स्यात्। णिसुढइ। पक्षे —

■ भार से आक्रान्त नमि धातु को कर्तृ में णिसुढ आदेश विकल्प से होता है।

⊙ णिसुढइ (नमति — भार से आक्रान्त होकर झुकता है)

नम् + तिप्

'भाराक्रान्ते नमेर्णिसुढः' (792) से भाराक्रान्त नम् को णिसुढ् आदेश

शेष पूर्ववत्

793. रुद-नमोर्वः 4/226

अनयोरन्त्यस्य वः स्यात्। नवइ। रुवइ, रोवइ।

■ रुद् और नम् धातु के अन्त्य को व होता है।

⊙ नवइ (नमति — झुकता है)

⊙ रुवइ, रोवइ (रोदिति — रोता है)

नम् + तिप्, रुद् + तिप्

'रुद-नमोर्वः' (793) से अन्त्य वर्ण को व्

शेष पूर्ववत्

रोवइ में 'युवर्णस्य गुणः' (663) से उ को गुण (ओ) हुआ है।

794. विश्रमेर्णिव्वा 4/159

विश्राम्यतेर्णिव्वा इत्यादेशो वा स्यात्। णिव्वाइ। पक्षे — वीसमइ।

■ विश्राम्यति को णिव्वा आदेश विकल्प से होता है।

⊙ णिव्वाइ, वीसमइ (विश्राम्यति — विश्राम करता है)

विश्रम् + तिप्

'विश्रमेर्णिव्वा' (794) से विश्रम् को विकल्प से णिव्वा आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — 'सर्वत्र...' (9) से र् का लोप

'शषोः सः' (16) श् को स्

'लुप्त य-र-व...' (15) से इ को दीर्घ करने पर वीसमइ बनेगा।

795. आक्रमेरोहावोत्थारच्छुंदाः 4/160

आक्रमेरेते त्रय आदेशा वा स्युः। ओहावइ, उत्थारइ, छुन्दइ। पक्षे — अक्कमइ।

■ आक्रमि को ओहाव, उत्थार, छुन्द — ये तीन आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ ओहावइ, उत्थारइ, छुन्दइ, अक्कमइ (आक्रमते — आक्रमण करता है)

आक्रम् + ते

'आक्रमेरोहावोत्थारच्छुन्दाः' (795) से आक्रम् को विकल्प से ओहाव् आदि आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — 'सर्वत्र...' (9) से र् का लोप

'अनादौ...' (6) से क् को द्वित्व

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

'ह्रस्वः...' (12) से आ को ह्रस्व करने पर अक्कमइ बनेगा।

796. भ्रमेष्टिरिटिल्ल-ढुण्ढुल्ल-ढण्ढल्ल-चक्कम्म-भम्मड-भमड-भमाड-तलअण्ट-झण्ट-झम्प-भुम-गुम-फम-फुस-ढुम-ढुस-परी-पराः 4/161

भ्रमेरेतेष्टादशादेशा वा स्युः। टिरिटिल्लइ, ढुण्ढुल्लइ, ढण्ढल्लइ, चक्कम्मइ, भम्मडइ, भमडइ, भमाडइ, तलअण्टइ, झण्टइ, झम्पइ, भुमइ, गुमइ, फुमइ, फुसइ, ढुमइ, ढुसइ, परीइ, परइ। पक्षे — भमइ।

■ भ्रम धातु को टिरिटिल्ल, ढुण्ढुल्ल आदि अठारह आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ टिरिटिल्लइ, ढुण्ढुल्लइ, ढण्ढल्लइ, चक्कम्मइ, भम्मडइ, भमडइ, भमाडइ, तलअण्टइ, झण्टइ, झम्पइ, भुमइ, गुमइ, फुमइ, फुसइ, ढुमइ, ढुसइ, परीइ, परइ, भमइ (भ्रमति — घूमता है)

भ्रम् + तिप्

'भ्रमेष्टिरिटिल्ल...' (796) से भ्रम् को विकल्प से टिरिटिल्ल्, ढुण्ढुल्ल् आदि आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — भमइ ('सर्वत्र.....' (9) से र् का लोप)

797. गमेरई-अइच्छाणुवज्जावज्जसोक्कुसाक्कुस-पच्चड्ड-पच्छन्द-णिम्मह-णी-णीण-णी-लुक्क-पदअ-रम्भ-परिअल्ल-वोल-परिअल-णिरिणास-णिवहावसेहावहराः 4/162

गमेरेते एकविंशतिरादेशा वा स्युः। अईइ, अइच्छइ, अणुवज्जइ, अवज्जसइ, उक्कुसइ, अक्कुसइ, पच्चड्डइ, पच्छन्दइ, णिम्महइ, णीइ, णीणइ, णीलुक्कइ, पदअइ, रम्भइ, परिअल्लइ, वोलइ, परिअलइ, णिरिणासइ, णिवहइ, अवसेहइ, अवहरइ। पक्षे —

■ गम् धातु को अई, अइच्छ, अणुवज्ज आदि इक्कीस आदेश विकल्प से होते हैं।

⊙ अईइ, अइच्छइ, अणुवज्जइ, अवज्जसइ, उक्कुसइ, अक्कुसइ, पच्चड्डइ, पच्छन्दइ, णिम्महइ, णीइ, णीणइ, णीलुक्कइ, पदअइ, रम्भइ, परिअल्लइ, वोलइ, परिअलइ, णिरिणासइ, णिवहइ, अवसेहइ, अवहरइ (गच्छति — जाता है)

गम् + तिप्

'गमेरई-अइच्छा....' (797) से गम् को विकल्प से अई, अइच्छ् आदि आदेश

शेष पूर्ववत्

798. गमिष्यमासां छः 4/215

एषामन्त्यस्य छः स्यात्। गच्छइ। इच्छइ, जच्छइ, अच्छइ।

■ गम्, इष्, यम् और आस् धातु के अन्त्य वर्ण को छ होता है।

⊙ गच्छइ (गच्छति — जाता है)

⊙ इच्छइ (इच्छति — चाहता है)

⊙ जच्छइ (यच्छति — विराम करता है, दान करता है)

⊙ अच्छइ (आस्ते — बैठता है)

गम् + तिप्, इष् + तिप्, यम् + तिप्, आस् + तिप्

'गमिष्यमासां छः' (798) से अंतिम वर्ण को छ्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

'अनादौ...' (6) से छ् को द्वित्व
'द्वितीय....' (14) से पूर्व छ् को च्
शेष पूर्ववत्
इसके अलावा जच्छइ में 'आदेर्यो जः' (73) से आदि य् को ज् तथा अच्छइ में 'ह्रस्वः...' (12) से आ को ह्रस्व (अ) हुआ है।

799. आङा अहिपच्चुअः 4/163

आगमेः अहिपच्चुअ इत्यादेशो वा स्यात्। अहिपच्चुअइ। पक्षे — आगच्छइ।

■ आङ् उपसर्गपूर्वक गम् को अहिपच्चुअ आदेश विकल्प से होता है।

⊙ अहिपच्चुअइ, आगच्छइ (आगच्छति — आता है)
आगम् + तिप्
'आङा अहिपच्चुअः (799) से आगम् को विकल्प से अहिपच्चुअ आदेश
शेष पूर्ववत्
पक्ष में — आगच्छइ (ऊपरवत्)

800. समा अब्भिडः 4/164

संगमेः अब्भिड इत्यादेशो वा स्यात्। अब्भिडइ । पक्षे — संगच्छइ।

■ सम् पूर्वक गम् को अब्भिड आदेश विकल्प से होता है।

⊙ अब्भिडइ, संगच्छइ (संगच्छति — संगति करता है, मिलता है)
संगम् + तिप्
'समा अब्भिडः' (800) से संगम् को विकल्प से अब्भिड् आदेश
शेष पूर्ववत्
पक्ष में — संगच्छइ

801. अभ्याङोम्मत्थः 4/165

अभ्यागमेः उम्मत्थइ इत्यादेशो वा स्यात्। उम्मत्थइ। पक्षे — अब्भागच्छइ।

■ अभि, आङ् पूर्वक गम् को उम्मत्थ आदेश विकल्प से होता है।

⊙ उम्मत्थइ, अब्भागच्छइ (अभ्यागच्छति — सामने आता है)
अभ्यागम् + तिप्
'अभ्याङोम्मत्थः' (801) से अभ्यागम् को विकल्प से उम्मत्थ् आदेश
शेष पूर्ववत्
पक्ष में — 'अधो मनयाम्' (5) से य् का लोप
'अनादौ....' (6) से भ् को द्वित्व
'द्वितीय.....' (14) से पूर्व भ् को ब् तथा गम् की प्रक्रिया पूर्ववत् करने पर अब्भागच्छइ बनेगा।

802. प्रत्याङा पलोट्टः 4/166

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्रत्यागमेः पलोट्ट इत्यादेशो वा स्यात्। पलोट्टइ। पक्षे — पच्चागच्छइ।

■ प्रति, आङ् पूर्वक गम् को पलोट्ट आदेश विकल्प से होता है।

⊙ पलोट्टइ, पच्चागच्छइ (प्रत्यागच्छति — वापिस लौटता है)

प्रत्यागम् + तिप्

'प्रत्याङा पलोट्टः' (802) से प्रत्यागम् को विकल्प से पलोट्ट् आदेश

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — 'त्योऽचैत्ये' (37) से त्य् को च्

'अनादौ....' (6) से च् को द्वित्व तथा गम् की प्रक्रिया पूर्ववत् करने पर पच्चगच्छइ बनेगा।

☆☆☆

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun